राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक : डॉ. पद्मधर पाठक
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक—१६४

सरदारसिंह विरचित

सुर-तरंग

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Reseach Institute, Jodhpur

1990 ई॰

प्रथमावृत्ति-500 मूल्य-21.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक : डॉ. पद्मधर पाठक
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक-१६४

सरदारसिंह विरचित

सुर-तरंग

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1990 ई.

प्रथमावृत्ति-500 मूल्य-21.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान-सम्पादक
डॉ. पद्मधर पाठक

ग्रन्थाङ्क १६४

सम्पादक
डॉ. डी. बी. क्षीरसागर ❀ डॉ. मनमोहन स्वरूप माथुर

प्रकाशक
राजस्थान राज्य-संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

मुद्रक
पंकज प्रिण्टर्स, जोधपुर

वि. सं. 2047 ई॰ सन् 1990

प्रधान सम्पादकीय

जीवन-चिन्तन के भारतीय दृष्टिकोण संगीत, साहित्य और कला को मनुष्यत्व के पर्याय के रूप में स्थापित करते है–और यही कारण है–युगों–युगों से–सदियों से–चाहे कोई भी शासन रहा हो–संगीत–साहित्य इन विधाओं में सर्जन–प्रक्रिया निरन्तर रूप से-अबाध चलती रही–हर शासन या शासक ने उन्हें प्रश्रय दिया या नहीं यह बात दूसरी है–किन्तु कलाकारों की साधना, साहित्यकारों द्वारा सर्जनात्मक रचना स्वच्छन्द गति से चलती रही निरन्तर बहने वाले स्वच्छ जलस्रोत की तरह–अविकल।

रचनाधर्मिता के इस प्रवाह में कई विषयों की चर्चा हुई–मुख्यरूप से प्रयोगात्मक होते हुए भी कलाओं को शास्त्रबद्ध किया गया–शास्त्र अर्थात् शासन–बिना शास्त्र के कला की साधना और प्रस्तुति में सुसूत्रता नहीं आ सकती–इस तरह के प्रयत्नों में सबसे पहले शाङ्र्गदेव द्वारा लिखे गये संगीत–रत्नाकर का स्मरण हो आता है–उसकी परम्परा में महाराणा कुम्भा का संगीतराज, अहोबल, श्रीनिवास, हृदयनारायण, शुभंकर ऐसे कई संगीत-शास्त्रियों ने अपनी कलम उठायी।

अधिकांशतः, संस्कृत में लिखे गये संगीत-शास्त्रीय ग्रथों के आधार पर हिन्दी में भी अनेक संगीत के ग्रंथों की रचनाएँ हुई–परन्तु संगीत रत्नाकर के पश्चात् लिखे गये संगीतशास्त्रीय ग्रंथों की मौलिकता के बारे में यदि प्रश्न उठाया जाय तो एक बहुत बड़ा विवाद खड़ा होगा–इसलिये चर्वित चर्वण ही सही परन्तु संस्कृत में लिखे अनेक ग्रंथ तैय्यार हुए–हिन्दी में लिखे गये संगीत के ग्रंथों की प्रशंसा में कम से कम यह बात तो कही जा सकती है कि संस्कृत के ताले में रखी सामग्री को उन्होंने जन-सामान्य के लिये उनकी अपनी भाषा में सुलभ किया।

शासकों के नाम से इस तरह की कई रचनाओं का प्रसार हुआ। जयपुर के सवाई प्रतापसिंह और जोधपुर के महाराजा मानसिंह आदि कई पूर्व शासकों का इस तरह के प्रयत्नों में उल्लेख करना समीचीन होगा—इसी परम्परा में बनेड़ा के शासक सरदारसिंह की 'सुर-तरंग' नामक यह लघु रचना है।

इसे केवल संगीत—शास्त्रीय रचना कहना अन्याय होगा—क्योंकि जिस समय में इसका निर्माण हुआ तत्कालीन संगीत की विधाएँ इसमें परिलक्षित नहीं होती है—फिर भी राग-रागिनी स्वरूप की विवेचना करने वाला सरदार-सिंह का कवित्व इस रचना के माध्यम से सहृदयों के समक्ष मुखरित होगा—एक बात और—कवि की भाषा—मेवाड़ी है—फिर भी ब्रज-भाषा अपना अक्षुण्ण प्रभाव छोड़े बिना नहीं रही है-मेवाड़ी और ब्रज के-मिश्रित स्वरूप ने सरदारसिंह के काव्य में एक विशिष्ट मार्दव को जन्म दिया है। इसलिये इस रचना की उपादेयता काव्य की दृष्टि से ही अधिक है।

डॉ. क्षीरसागर तथा डॉ. माथुर के परस्पर सहयोग से इस ग्रंथ का संपादन पूर्ण हुआ—उनके इस सत् प्रयास को आपके हाथों सौंपते हुए मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। म. पंकज प्रिण्टर्स, जोधपुर ने इसे मुद्रित करने में जो सहयोग प्रदान किया उसके लिये वे साधुवाद के पात्र हैं।

पद्मधर पाठक
निदेशक

अपनी बात

राजस्थान के वीरों की शौर्य गाथाएं और उनकी परम्परा को तो कदाचित् पृथ्वीराज रासौ से प्रारम्भ किया जा सकता है–साथ ही शासकों के संरक्षण में लिखे और प्रशंसा पाये गये साहित्य-ग्रन्थों का तो कोई पार ही नहीं है–रही बात संगीत की अभिरुचि की। प्रायः हर राजपूत के लिये यह यहां कहा–सुना जाता है कि वह राजपूत ही क्या जिसने शराब नहीं पी तथा जिसने महफ़िल नहीं की! इधर, राजस्थान के कुलीन क्षत्रीय वंशों और उनके राजदरबारी जीवन पर अध्ययन करके जो बात सामने आती है, उसमें संगीत को दरबारी शिष्टाचार का एक अनिवार्य अंग माना गया प्रतीत होता है और यदि कभी शासक की भी रुचि अनुकूल रही तो उसने कलाकारों को ही नहीं शासकों को भी अमर कर दिया। चाहे तेरहवीं शताब्दी के महाराणा कुम्भा हों या उनके चार सौ साल बाद हुए महाराजा मानसिंह हों या अधुनातन काल के सवाई प्रतापसिंह हों। इन्होंने शास्त्रों का अध्ययन भी किया, अपनी रचनाओं को कलावंतों से गवाया और यदि साहित्यिक प्रवृत्ति भी अनुकूल रही तो प्राचीन शास्त्रों के आधार पर ही क्यों न हो–नये ग्रन्थों, नयी रचनाओं का भी सर्जन किया। ऐसे निर्माण में शासक चाहे मेवाड़ का है या शेखावटी का अथवा देवगढ़, बेदला, बनेड़ा किसी स्थान का ठिकानेदार हो–निर्माण के मूल्यांकन में कोई अन्तर नहीं आता।

इसी दृष्टि से मेवाड़ के अधीन बनेड़ा के राजा सरदारसिंह और उनके ग्रन्थ 'सुर-तरंग का मूल्यांकन किया जाना चाहिये। वैसे कुंवर सरदारसिंह का जन्म राजावत किशनकुंवर की कोख से वि. स. 1780 की आसोज वदि अमावस्या का बनेड़ा में हुआ। इनके पिता सुलतानसिंहजी की अस्वस्थतावश मृत्यु हो गई थी। अपने पिता की मृत्यु के अवसर पर सरदारसिंह मात्र ग्यारह वर्ष (आषाढ़ सुदी 7 वि. सं. 1791) के थे। इसी अवस्था में गद्दी पर विराजमान होते ही उन्होंने अपनी बहन स्वरूप-कुंवर का विवाह जोधपुर के महाराजा अभयसिंहजी से करवाया।

संकट के समय महाराजा अभयसिंहजी ने उन्हें काफी सहयोग किया। वे सरदारसिंहजी को शाही-दरबार में वि. सं. 1792 ज्येष्ठ वदि 3 का दिल्ली दरबार में मिलवाने लाये। यहाँ दुर्ग बांधने की सम्मति ली गई तथा बादशाह मुहम्मदशाह ने उन्हें सिरपेच, कलंगी, मोती की माला, सिरोपाव, हाथी आदि देकर राजा की पदवी प्रदान की।[1]

राजा सरदारसिंह के समय तक मुग़ल साम्राज्य जर्जर हो गया था। अतः अब राजा सरदारसिंह ने मुग़लों की मनसबदारी को ग्रहण करने के बजाय महाराणा उदयपुर की छत्रछाया में जाना उचित समझा। उन्होंने रावत केसरीसिंह (सलूम्बर) के माध्यम से अपना मन्तव्य महाराणा जगतसिंहजी से निवेदन कराया। महाराणा ने केसरीसिंहजी को वचन दिया कि वे उनकी सुरक्षा का भार लेते हैं। मेवाड़ से उन्हें पट्टा दिया जायेगा। तब राजा सरदारसिंह को मेवाड़ की चाकरी करनी पड़ेगी। राजा सरदारसिंह ने इस हुक्म को स्वीकार किया और अब बनेड़ा परगना मेवाड़ के संरक्षण में हो गया।

बनेड़ा के इतिहास में पौष वदि 12 शनिवार वि. सं. 1813 को एक दुःखद घटना घटी-शाहपुरा के उम्मेदसिंह द्वारा धोखे से बनेड़ा-किले पर आक्रमण कर उस पर अधिकार करने की। इसमें मुख्य हाथ महाराणा जगतसिंह के पाटवी कुंवर प्रतापसिंह का था। किन्तु जगतसिंह की मृत्यु के उपरान्त उसने आक्रमण को रोकने के लिये राजा सरदार सिंह को आदेश दिया कि वे बनेड़ा का मार्ग अवरुद्ध कर दें ताकि पांचों सामन्त (देवगढ़ के रावत जसवंतसिंह, देलवाड़ा के राघवदेव, सनवाड़ के बाबा भारतसिंह, शाहपुरा के उम्मेदसिंह) मेवाड़ में प्रवेश न कर पायें। महाराणा की मृत्यु के बाद उचित समय पाकर उम्मेदसिंह शाहपुरा ने बनेड़ा दुर्ग पर हमला किया। राजा सरदारसिंह को दुर्ग की दुर्दशा देख कर बहुत दुःख हुआ और अब वे अधिक-

---

१. श्री ना. श्या. चिताम्बरे-बनेड़ा राज्य का इतिहास, पृ. ६८

तर उदयपुर महाराणा के पास ही रहने लगे। यहीं इस हादसे से उनका स्वर्गवास चैत्र वदि 14 वि. सं. 1815 को हुआ।

इस घात-प्रतिघात युक्त राजनीतिक जीवन में भी राजा सरदारसिंह का हृदय भावक रस-सिक्त था। वे एक अच्छे कवि और संगीत के ज्ञाता थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में एक पुस्तक सुर-तरंग' का निर्माण किया। इसमें विभिन्न शास्त्रीय एवं लोक-रागों का विवेचन है। लेखक ने इसकी रचना वि. सं 1805 में की थी।

माघ मास वदि नवमि तिथ अनुराधा ससिवार।
अधिक नून आवै कहूं, लीज्यौ आप विचार ।।14।।[1]

सरदारसिंह कृत 'सुर-तरंग' का परिचय

प्रति परिचय—

आलोच्य रचना को हमें चार हस्तलिखित प्रतियाँ, प्राप्त हैं– (1) विक्रम संवत् 1808 की प्रतिलिपित प्रतिलिपि राजस्थान प्राच्य विद्या–प्रतिष्ठान, उदयपुर के देराश्री संग्रह के ग्रंथांक 4240 पर सुरक्षित है। (2) दूसरी प्रति भी उदयपुर शाखा कार्यालय में ही ग्रन्थांक 4193 पर संगृहीत है। इसका लिपिकाल वि. सं. 1883 है और लिपिकर्ता शिवरम सुखवाल है। (3) रचना की तीसरी प्रति महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर में उपलब्ध है।[2] इसकी पुष्पिका में लिपिकाल और लिपिकर्ता का उल्लेख नहीं है ।(4) प्राप्त चौथी प्रति राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी (जोधपुर) मेंउपलब्ध है। अध्ययन की सुविधा के लिये हमने यहाँ इन प्रतियों को क्रमशः क, ख, ग, घ नाम दिये हैं। पाठ-भेद इसी रूप में प्रस्तुत है –

पाठ-संगति की दृष्टि से 'ग' प्रति महत्वपूर्ण है। इसमें कुछ ऐसे पाठ हैं जिनको ग्रहण करने से अर्थ संगति ठीक बैठती है। अतः सम्पादित अंश में इनका यथा-प्रसंग उल्लेख किया गया है। लिपि, कागज और स्याही के

---

१. प्रथम तरंग, २. ग्रंथांक १३६३

आधार पर इसका लिपिकाल परवर्ती सिद्ध होता है। यह प्रति भी गुटका रूप में है, जिसका आकार 10×13.5 से. मी. है। प्रत्येक पृष्ठ में आठ पंक्ति में 18 से 20 ग्रंथ प्रतिलिपित है। सारी रचना 98 पत्रों में समाहित है। कुल पद इस प्रति में 245 हैं। तरंगानुसार इनका विभाजन इस प्रकार है—

प्रथम तरंग–1 से 80 छंद,
द्वितीय तरंग–81 से 109 छंद,
तृतीय तरंग–110 से 159 छंद,
चतुर्थ तरंग–160 से 189 छंद,
पंचम तरंग–190 से 220 छंद और
षष्ठ तरंग–221 से 245 छंद।

इन चारों प्रतियों में से आधार प्रति के रूप में हमने 'क' प्रति को ही ग्रहण किया है। 'क' प्रति के प्रथम छह पत्रों की अनुपलब्धि के कारण इन पत्रों में प्रतिलिपित प्रथम तेंतीस छंद हमने 'ख' प्रति के आधार पर सम्पादित किये हैं। इसका प्रमुख कारण दोनों प्रतियों के पाठों की अत्यधिक समानता है। पाठ–भेद पाद टिप्पणी में प्रस्तुत किये गये हैं।

सुर-तरंग की विषयवस्तु–

सम्पादन के पश्चात् आलोच्य रचना में कुल 251 छंद निर्धारित होते हैं। इन 251 छंदों को कवि और संगीतशास्त्री राजा सरदारसिंहजी ने छह तरंगों में प्रस्तुत किया है। प्रथम तरंग में 79 छंद हैं। आरंभ में भगवान गणेश, शिव, गंगा की स्तुति करते हुए राग-भैरव और उसकी भार्याओं का विवेचन लक्षण एवं उदाहरणों सहित प्रस्तुत किया है। द्वितीय तरंग 80वें छंद से आरंभ होकर 108 वें छंद पर समाप्त होती है। इन 28 छन्दों में

मालकौंस राग का विवेचन हुआ है । तृतीय तरंग राग हिण्डोल और उसकी भार्याओं से सम्बद्ध है । इस तरंग का विवेचन कुल 51 छन्दों (109 से 158) में किया गया है । चतुर्थ तरंग का आरम्भ 159वें छंद से होता है और अन्त 189 वें छन्द पर । इस तरंग में राग दीपक की भार्याओं का वर्णन निहित है । पांचवीं तरंग (छन्द 220 से 251) में राग मेघ और उसकी भार्याओं का लक्षण-उदाहरण सहित वर्णन है ।

इस प्रकार आलोच्य रचना नाम एवं विषय की दृष्टि से एक संगीत-शास्त्रीय कृति है जिसमें छह राग जातियों की विभिन्न रागिनियों का लक्षणोदाहरण सहित विवेचन तद्‌युगीन रीति शैली पर आधारित है । विविध रागिनियों के जो उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं वह रीति काव्य-परम्परा की धरोहर है । राधा और कृष्ण को क्रीड़ाओं से सम्बद्ध है । इसका प्रमुख कारण रचयिता का रीतिकाल में होना है । रीतिकाल साहित्य एवं कला की दृष्टि से सम्पन्न काल था । इन्हीं प्रवृत्तियों की प्रतिनिधि रचना के रूप में 'सुर-तरंग' को स्वीकारना चाहिये । आलोच्य रचना में कवि ने संगीत विवेचन में भले ही मौलिक उद्‌भावना न की हो पर साहित्यिक दृष्टि से उसके वर्णन सरस और मौलिक हैं । मालकौंस राग के संदर्भ में कवि द्वारा प्रस्तुत रतिक्रीड़ा का सरस बिम्ब हमारी मान्यता को स्पष्ट करता है—

सारी निस प्यारी पिय पौढे री चित्रसारी बीचि,
कामरस भीने दोउ हावभाव आने है
दोउ अंक भरे डार डार भुज पाश गरे,
हरे मन दोउन के दोउ रस साने है
कहै सिरदार हार दोउन को पहिरावै,
दोवु रीझि रीझि सुन ककुभ की तानै है
केलि के अघानै दोउ दोउ के समाने हिये,
सिसर निसा में पर ताने लपटाने है ।।105।।

कवि की यह रति विषयक कल्पना पूर्णतः शास्त्रीय प्रणाली द्वारा रचना में प्रस्तुत हुई है । श्रृंगार श्रृंगार से सम्बन्धित विभिन्न स्थितियों,

नायिका स्वरूप, अनुभाव चित्रण, नखशिख वणन, विपरीतरति वर्णन सभी का चित्रण रीतिकालीन काव्यशास्त्रीय प्रणाली के अनुरूप हुआ है—

अनुभाव चित्रण—

सलौनी सेऽभड़ी ल्याई ।
हाथों हथा सिंगार चाके रसवलै लै दरपन घाई ।।
पान षवाई दिषाई सिरीमुष वातन समझाई ।
धरत अग्र डग परत पीछ पग तहा सों हर षाई ।।
लै निसंक सिरदार स्व अंक अब कीजै मन भाई ।।103।।

नख शिख वर्णन—

हीरा से रदन रदन छः प्रवाल असैं,
सोने सम अंग कच मानो नाग सून री ।
श्रीफल से कुच मालती लता से हाथ
कंज से अरुन नष नषत ते दून री ।
कहै सिरदार सोहे भ्रकुटी कमान असी,
नवं भ्रगनैनी के मदन सर तून री ।
चंद सो ब-न लीन्है सोरहो सिंगार कीन्है,
उपत सी आवै आप चूवत सी चूनरी ।।171।।

वयसंधि वर्णन—

बाल तन जोबन आयो लाल ।
दीपत देह नेह जत असें रैनि मसाल ।
चंचलता गई विसरी छबीलो लीन्ह गुर गतिहाल ।
पून्यो सरद चंद्रमा के सम झलकन लाग्यो भाल ।
लंक छीन भये पीन पयोधर अधर बिंब सम लाल ।
कहि सिरदार रमत निस यासौंह्वै हौं स्याम निहाल ।।187।।

कृष्णाभिसारिका–

कारे कारे रेसम की डोरनि सो आभूषन,
मुहि कारो चोवालौ चढ़ायो सब जात है ।
ओढ़ि कारी सारी वेसी कारी अंधियारी,
निस भयानक भारी तोह तैकौ न साकांत है
कहै सिरदार सोहै अमरि को उर हार,
अमर अंचिर भीर भीरम डरात है ।
नूपुरन मदि छुद्र घंटिका बजै न मानौ,
मदन महीप गज घंटा बिन जात है ।।86।।

प्रोषित-पतिका (स्त्री मन का सूक्ष्म) चित्रण–

माई आजु लालन आवै री ।
फरकत कुच भुज अंक भरन हित सुमन सुहावे री ।
बैठत काग आगमन बूझत उड़ उड़ जावै री ।
आछै लागत आभूषन दासी जे उजरावै री ।
तरकत तनी वाम द्रिग फरकत चैन बतावै री ।
बिना कहै सिरदार बार लिये मंगल गावै री ।।203 ।।

उन्माद-दशा–

अचानक मो तन माई कौन व्याधि ह्वै आई ।
चंचल पग न चलत नितहि मग अब न भरी डग जाई ।
छीन लंक लषि हो जीय संकत अरु नित बगर खाई ।
नैना अैन देत नष अंजन कानन आनि लगाई ।
राति कली हुलसो जिय छातो पल-पल सो सरसाई,
कहै सिरदार डरै मति तौ पीये के कर पास बुझाई ।।204।।

रीतिकालीन प्रभाव एवं रीति शैली के कारण कहीं- कहीं रचना में मादकता का अहसास होने लगता है । पर सामाजिक मर्यादाओं का हनन कवि का लक्ष्य कहीं नहीं दीखता । रात्रि में नायक-नायिका को सयोग की

स्थिति मिलो है। नायक ने वैसे ही सारी रात्रि बिता दी । अतः नायिका अति मार्मिक शब्दों में प्रिय को मुख चूमने का अनुनय करती हुई कहती है कि अब रात्रि थोड़ी शेष हैं। अब बरजोरी मत करो। यह तोता सारी बातें सुन लेगा और प्रातः सबके सामने कह देगा। अब आप भी अपनी पाग सुव्यवस्थित कर लो—

पिय मोहि बदन दीजं रैन रही अब थोरो
जागी सास ननद द्यौरानी चिग ढिग आई छोरी।
ह्वै हैप्रोति रोति फिर बालम क्यौं कीजे तू बरजोरा,
ग्रे सारो सुक सुनि रस बचना बकिहैंगे जिम हारी।
बांधी पाग सभाग गेहो पग ह्वै बोली तिये भोरी,
चुंमि बदन सिरदार स्याम हसि लई अंक भरि गौरी ॥117॥

कवि का मूल लक्ष्य संगीत विवेचन रहा है, अतः यहां नखशिख वर्णन काम-दशाओं आदि का क्रमबद्ध चित्रण नहीं हो पाया है। सहज रूप में काव्यत्व का समावेश ही आलोच्य रचना की सबसे बड़ी विशेषता है। अपने विषय को स्पष्ट करने के लिये जैसे भी सर्जक उदाहरण देना चाहता था, उन्हें उन्हीं के अनुरूप प्रस्तुत किया है।

सुर-तरंग के रचनाकार राजा सरदारसिंह को अपने विषय संगीत और साहित्य का विशद शास्त्रीय ज्ञान था। तभी वे 'सुर-तरंग' की प्रथम तरंग की छंद संख्या 22-28 तक नाद एवं राग को शिव, ब्रह्मा, गंगा के पौराणिक रूपक द्वारा व्याख्यायित करते हैं। प्रत्येक राग को नारद और तुंवर ऋषि के कथन द्वारा सही गाने का भी आग्रह किया हैं(छंद 26)।

नाट्य शास्त्र में संगीत(नृत्य) का अधिष्ठाता शिव को कहा है। कवि ने भी अपनी रचना में जगह-जगह पर शिव का बखान किया है। आरंभ में ही वह शिव और गंगा की स्तुति(छं. 2) करता हुआ ग्रंथ रचना का कारण ही शिव की कृपा को बताता है(छं 3) और चतुर्थ तरंग में केदार राग का विवेचन करने के लिये उनका अनुप्रास युक्त वर्णन कर ही डालता है—

ग्रीषम में अधरात गाईये तू ओडौ ।
जाति भवन निषद नि स ग म पि पेषिये ।
जटा-जूट सीर सुर-सरिता श्रवत जात ।
अवदात चंद षंड भाल में बसेखिये ।
तापसी सरूप बैठी निपट अनूप येह ।
रागिनी केदार दार दीपक की देषिये ।।180।।

संगीत, कला के साथ ही शास्त्र भी है । विभिन्न समय के अनुसार राग का गाना; एक निश्चित राग के साथ निश्चित स्वर या ताल का प्रयोग संगीत कला को शास्त्रीयता प्रदान करते हैं । समय के अनुसार विभिन्न रागों और जातियों का विकास हुआ है । उन्हीं के अनुरूप रागों का समय, स्वर आदि का निर्धारण किया जाता है । राजा सरदारसिंह, बनेड़ा संगीत के इस गुण से पूर्ण परिचित थे । उन्हें तत्कालीन संगीत के व्यवहार का पूरा ज्ञान था । रचना के प्रथम तरंग में षट्राग विवेचन में कवि ने अपने समय की संगीत परम्परा का परिचय देते हुए बताया है कि तब राग भैरव में रे, ध, नि के प्रयोग अप्रचलित थे–

बिना ही व्रषभ धानी भैरो राग गावत ही
गन गन फिरै जिनह जानत जगत ही ।

'सुर-तरंग' एक शास्त्रीय रचना है, अतः अपने कथ्य की व्याख्या के लिये इसमें वर्णनों का बाहुल्य है । यह वर्णन देशकाल और तद्युगीन सम्पूर्ण सामाजिक स्थिति को समेटे हुए है । कवि अनुप्रास की छटा से राग रामकली का मनोहारी वर्णन इस प्रकार करता है । इस वर्णन में आलोच्य राग के समस्त गुण स्वतः ही स्पष्ट हो रहे हैं–

चंदहु की चांदनी अमंद दुत्ति मंद भइ,
चीरैया चुहचुहानी नषत सिधाऐ री ।
दीप जोति फीको परी परियाल बाकी घरी,
रामकली तान सुरंगी तन में गाऐ री ।
राती सोभा आसमान भासी छवि भासभान;
धांम धांम बांम दधि मथना घुमाऐ री ।।

रसिक सिरोमनि सलोने सिरदार कान,
जानिनि ना परत किहा बाल बिलमाऐ री ।।118।।

बनेड़ा-वर्णन (छन्द4-7) सभा वर्णन (छन्द 8-11) आदि ऐसे ही अन्य सरस स्थल हैं। सरदारसिंह जी के वर्णनों की कलात्मकता एव सरसता इन दो छन्दों में विशेष द्रष्टव्य है–

विपरीत रति–

रंच न भरी सेझ साँवरे सो रति कर,
फूलक सी दरी पीय भरी अंक भामिनी ।
आसन आलिंगन अनेक भांति चुंबन,
करत विपरीतिन रिझाई गज-गामिनी ।
कहै सिरदार हार मोतिन के टूट गये,
छूट गई बेनो सुष सनो इत भामिनी।
पलक सो पल लागी विरह वियोग पागी,
जामिनी बिहानी लागी विलषानी कांमिनो ।।96।।

सिसिर निसा मैं जामं तीज गाईयतु,
ध, न, स, रि, ग, म धैवत सुधाम बसत है ।
षाडो जाति पीक बैनी मृगनैनी दैनी मोद,
सुंदर सुघर रंग राग मैं मसत है ।
कहै सिरदार सीसफूल टीको भाल,
जलसुत माल हरी कंचुकी गसत है ।
पहरी कसुंभी सारी अति ही पिआरी नारी,
षंभाइची मालकौंस राग की लसति है ।।100।।

इन वर्णनों एवं कथनों को कवि द्वारा प्रयुक्त सहज भाषा ने पूरा सहयोग दिया है। दूहा सोरठा कवित्त पदों और सवैयों से मेल करती हुई शब्दावली का प्रयोग कर कवि सरदारसिंह ने जहां अपनी शास्त्रीय सुगमता को बढ़ाया है वहीं पाठकों को रवानगी दी है। संगीत की रचना में यह संगीतात्मकता

उसे एक प्रभावोत्पादक रचना बना रही है। भाषा को रवानगी को अनुप्रास की छटा ने भो बढ़ाया है। छन्द सं. 49, 97, 124, 127, 202 छन्द इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। राग दीपक रूप कथन के वर्णन में अनुप्रास के साथ कवित्त का सौंदर्य देखिये–

चढ्यो गजराज गज गवगीन संग लिये,
कीन्है सुप रंग अंग सुन्दर मयन तें।
सुमन अनारहु ते अधिक अरुन देह,
नेह भर्यौ तरुनी बिलोकित चयन तें।
कहै सिरदार गरै हार गज मोतिन कौ,
स, रि, ग म पि ध नि प्रकास तब येन तैं।
गाइऐ षरिज भौन ग्रीषम जुगम जांम,
संपूरन दीपक भौ भान के नये नत ।।159।।

अनुप्रास के साथ ही उपमा, उत्प्रेक्षा, यमक, भ्रांतिमान, संदेह, उल्लेख, उदाहरण अलंकारों के माध्यम से भी कवि ने अपनी विषय-वस्तु को भाव और भाषा-सौंदर्य प्रदान किया है–

बिथुरे कच सुथरे कुच सोह नष रेषा,
मानो, सिव कंचन के धरै ससि सेषा।

'सुर-तरंग' के अध्ययन से पता चलता है कि इसका रचयिता बहुभाषा-विद् था। पंजाबी की विभक्तियां और शब्द तो अनेक छन्दों (छन्द 97, 98, 169) में प्रयुक्त हुए हैं। गुजराती शब्दावली भी यत्र-तत्र अपना परिचय दे रही है। रचना मूलत: व्रज-मिश्रित राजस्थानी में लिखी हुई है, जिसमें भीलवाड़ा अंचल की बोली (मेरवाड़ी मेवाड़ी) की बहुलता है। सरस, मंडित, अलि, कपोल, जगपति आनंदकरन बुद्धिदायक घनसार, मुक्तामनि, विरंची ब्रह्मधीर सुताल समीप, कंचुकी विहार भृकुटी सुधामिनी, परिरंभन, पुलिन, कंकन, स्यामल, अनग, किरीट, विराजत, छवि, विलोकि, मान, मारतंड मीन, घन, पतंग, सुत, सलौना, आभूषन, निहारत,

आनन्, रजनी, मतग, त्रिभंग, विद्रम रविजा, उमंग, मनोचित, मनमोहन, अनुदित, विलास; अकुलाये, मंजरी, निकद, पंचम, भवन अनुरागी, वादन, समीर, प्रभा, आगरी, नागरी, उदित कुण्डल, श्रवन, भाल, कुच, सजल, मौंद, सदन, किसलय, रभन, चुंबन, दंपति दामिनी, चपला, कामदल, अंगना, कच इत्यादि संस्कृत तत्समों की सहज सरसता देखते ही बनती है।

इस प्रकार की काव्यशास्त्रीय और भाषाशास्त्रीय चर्चा से कभी ऐसा लगने लगता है कि 'सुर-तरंग' कहीं 'सुरत-रंग' की काव्याभिव्यक्ति तो नहीं। ऐसा सोचना इसलिये भी सही है कि शार्ङ्गदेव के संगीतरत्नाकर के पश्चात् संगीतशास्त्र पर लिखे गये अधिकांश ग्रंथ चाहे वे किसी भी भाषा में हों, अपनी मौलिकता का बखान शायद ही कर सकें। राजा सरदारसिंह की दृष्टि से भी किया गया छह राग छत्तीस रागिनियों का वर्णन और वह भी अधिकांश उत्तर भारत में मुसलमानी संगीत के व्यापक प्रभाव के रहने पर भी, किंचित् अखरने वाला है। हो सकता है कि प्राचीन भारतीय संगीत पद्धति में राजा सरदारसिंह को अधिक आस्था रही हो, किन्तु किसी भी स्थिति में उनके अपने समय में प्रचलित संगीत से उन्होंने अपने सुरों की तरंगों को आह्लादित नहीं किया है। इसलिये थोड़ी-सी हिचकिचाहट के साथ ही क्यों न हो हमें यह स्वीकारना होगा कि 'सुर-तरंग' एक कवि कर्म है। उसका महत्व उसी दृष्टि से आंका जाना चाहिये। सुर-तरंग' का संगीत-शास्त्रीय पक्ष काल के साथ प्रवहमान न होने से मात्र एक शास्त्र रह जाता है। अतः सुर-तरंग के पाठक और आलोचक दोनों ही अपने-अपने मंतव्यों से हमें अवगत कर भूल सुधार का एक अवसर अवश्य प्रदान करेंगे, क्योंकि वह ही हमारे इष्ट की प्राप्ति है–'हमारे साध्य की सिद्धि है।

सम्पादक

सवाई सरदारसिंह-कृत

सुरतरंग

(सिद्ध)[1] श्री गणेश जी (प्रसादात)[2] श्री एकलिंग जी (प्रसादात)[3] ।। श्री सरस्वती जी (प्रसादात)[4] ।। अथ सुरतरंग ग्रंथ लिषते ।।

कवित्त

सरस सोभ सिंदूर भसुंड मंडित कपोल अलि,
कनक टोप नग जटित कुंभ जगमगत जोति भलि,
भाल सै चंद[5] जग वंद चंद धर नंद महि-[6] मति;
लंब उदर[7] भुज च्यार चारु[8] भूषण जुत जगपति,
सिरदारसिंह वंदत चरन विघन निवारन अघ हरन,
जय विमल बुद्धि दायक सुमुष एक दंत आनंद करन ।।1।।

छप्पय

गंगधार इत मंगइ तहि उतइ मंग मुक्त लर,
इतहिं भाल मध्य चंद उतहिं चंदन सु आडंबर,
इत भस्मित तन लसत, उतहि घनसार घसित तन,
इत भूषन बर ब्याल उतहिं मुक्तामनि भूषन,
शिवशक्ति भेष सम धरन जप ध्याय न्रपति सिरदारसिंघ,
सुर राग[9] रागनी तालछबि उतपति समय प्रकास किय ।।2।।

राजसिंह (रांणा)[10] अमांन (चित्तौड़)[11] थानपति,
हिंदवान मही भांन मान दीपति जा[12] दीपत,
ता सुत भीम उदार भीम सन पराक्रमी मय,[13]
ता सुत सूरज रजमल अमित दीनन सुं दान दय,

---

1 क ख ग–सिध । 2–4 क ख ग - प्रासादातुः । 5 'ग' प्रति में 'चंद' पद नहीं है । 6 ग - महा । 7 क ख--लंबजदर । 8 क - चार 9 'ग' प्रति में पाठ नहीं है । 10 क ख ग-रानां 11 क ख ग-चीतोर 12 क ख-ता 13 ग–भय

तिह तनय सिह सुरतांन न्रप भये बीर मेवाड़ धर;
सुरतांन नंद सिरदार यह रच्यो ग्रंथ धरि ध्यांन हर ।।3।।

सोरठा

सुवस बनेड़ा नांम सकल भूमि जाहर सरस ।
सरवर कूप[14] आरांम आसपास गिरकोट[15] तरु ।।4।।

सुमतिदायक (सिद्ध)[16] चामुंडा देवी जहां ।
राजत परम (प्रसिद्ध)[17] सो पूरब तरफ ।।5।।

सहित भूप सिरदार, ताकी कृपा कटाछित ।
बैठी दुरग सिरदार, करत राज सिरदार न्रप ।।6।।

रच्यो (जव)[18] थल मांहि दुरग सुरग के[19] बंधु सो ।
रहत रंच डर नाहि, बसे जास डर अरिन को ।।7।।

दोहा

तहां सभा बैठत (सुभटि)[20] सुकवि सुपडित लोग ।
वारि नारि नटवान करि[21] एक एक तें जोग ।।8।।

अरज करी सब गुनिन यों चतुर भूप सिरदार ।
राग रागनी भेद-जुत कीजै ग्रंथ बिचार ।।9।।

राग ताल सुर भेद रितु, भेद न लषियतु कोय ।
ताते नर भाषा सरस, ग्रंथ सरल इक होय ।।10।।

सकल गुनिन की अरज सुनि, मौ[22] मन मोद अपार ।
सुरतरंग यह नाम को, कीयो ग्रंथ विस्तार ।।11।।

---

14 क ख—रूप 15 क ख -गिरकेट 16 क ख ग - सिध 17 क ख ग—प्रसिव
18 क ख—जच, ग—उच। 19 ग—को । 20 क ख—सुभई, ग—सुभट।
21 क ख— कारे। 22 ग—भौ।

सुर तरग जाते चढे सुर तरंग[23] लहि चित्त ।
सुर तरंग यां ग्रंथ को, नाम कियो यह हित्त ॥12॥

माघ मास बदि नवमि[24] तिथ, अनुरावा ससिवार ।
अष्टादस सत पंच सुभ, कियौ ग्रंथ बिस्तार ॥13॥

सुघर सुपंडित भूप कवि, यह जांचत सिरदार ।
अधिक नून आवै (कहूं), लीज्यौ[25] आप विचार ॥14॥

अथ सप्त सुर-(न) के नामः घनाछरी

सपत हैं सुरनांम तिनके अनेक बिधि;
अेक बिधि प्रथम षरिज नाम गाइए ।
दूसरै रिषभ तीजे गंधार कहत गुनो चौथे,
सुर मध्यम चतुर पहचानिए ।
पंचम है पंचम कहत छठो धैवत है,
सातवों निषाद सुर सुघर प्रवानीए ।
उतपति सुर तीन नांम कंठ सीसही तें,
कहे सिरदार ऐ संगीत मत आनीए ॥15॥

दोहा

षरिज रिषभ गंधार गनि, (मद्धिम)[26] पंचम जांनि ।
धंवत और निषाद सुर, ऐ सातूं पहिचानि ॥16॥

अथ सपत सुर की उत्पत्ति

घनाछरी छंद

केकी को कुहक सो षरिज सुर जानि लीजे,
चातक के बचन रिषभ[27] सुर लेषीए ।

23 ग—तुरंग 24 क ख—नव्रमि 25 क ख ग—कहुं । 26 क ख ग—मधिम ।
27 ग— रिष ।

उचरत छाग जांनि लीजिए गंधार सुर,
कुरज के बोल सुर मध्यम ही पेषीए ।
कोकिल के बैन सुर पंचम लषीजे ग्रे,
नहीं सत तुरग सुर धैवत बिसेषीए ।
घन की गरज[28] निषाद सुर जान गुनी,
कहे[29] सिरदार यों सपत सुर पेषीए ।।17।।

अथ सपत सुर (न) के भेद

दोहा

राग ग्रलापे जिह गुनी, लषियत है चितलाय ।
जो सुर ग्रावै ग्रादि में, वही धाम ठहराय ।।18।।

लेह जहाँ विश्राम सुर, वही मुरछना लेषि ।
जांमे सुर सातों फिरै[30] सो संपूरन पेषि ।।19।।

जांमे सुर पंचै[31] फिरै[32], ग्रौडो जाति सुजांनि ।
जांमे सुर षट ग्रावही, षाडो जाति सुमांनि ।।20।।

तीन भांति ऐ राग की, कही जात सिरदार ।
यही रीत संसार में, गावत गुनी ग्रपार ।।21।।

अथ राग कल : राग धमाल

नहीं नाद ब्रह्म में भेद कोय
हो कहत सुनो बुधिवान सोय ।
भई प्रकट नाद तें गंग ग्राप
जाहिर त्रिलोक तिनका प्रताप ।।22।।

---

28 क ख—गराज । 29 क ख—कहो । 30 क ख—फिरै । 31 ग—पंच ।
32 क ख—फिरै ।

सिव (कियो)[33] ग्राप इक समय गान
हरियो (बिरंची)[34] की ग्ररज मान ।
सुनि राग विष्णु ह्वै गये नीर
सो भर्‌यो कमंडल ब्रह्म धीर ।।23।।

सिव धर्‌यो वही जल[35] ग्राप सीस
सो धार ग्रजौं लगि परत दीस ।
विध धोए ता जल विष्णु पाय
जल धर्‌यो रूप बावन सु ग्राय ।।24।।

भई प्रगट तहां ते गगधार
सिरदार कहत यह बात सार ।
जे सुनत राग रागिनी जांनि
ते लहत ईस पद को निदान ।।25।।

घनाछरी छंद

गावत सुनत राग रागिनी सुताल तान,
ग्रहनिस होत राग गंधव[36] रूप मान ।
के पुनि बिराजी[37] सुरन समीप सुध,
नारद रु तुंवर के मुष की सुनहिं तान ।
इंद्र के सभासद के होत सषा संकर के,
जक्षपति मित्र ह्वै पवित्र भोग ग्रछरांन ।
हरिहर ग्रातम के पद जे सुनहिं गावै,
कहै सिरदार ते लहत दिव्य नर बांन ।।26।।

पंचम सुबेद पंच ग्रानन प्रगट कीन्हो,
लीन्हो धारि नारदादि ग्यांनी जे सुचेत हैं ।
पिघलत[38] पाहनहू सुनि सुनि जाकी धुनि,
व्यालहु पताल तें निकसि कान देत हैं ।
ग्राछे द्रिग वारे म्रग बासी जे (ऊजारि)[39] कैते,

33 क ख ग—कीयो । 34 क ख -बिरोंरंची ग—विरंच । 35 ग—जत्रै । 36 क ख ग—गंधाव । 37 क ख—विराजए जी । 38 क ख—ऊजारी, ग—उजार ।

तान सुनि देत तन छाड़ तन षेत है ।
धन्य हैं ते सिरदार कहे सिरदारसिंह[39],
ग्रैसो चीज राग जासों[40] राषे जे न हेत है ।।27।।

दोहा

नारद ग्रो तुंवर हुवो, ग्रति बल्लभ सिव हीय ।
नंदी गनपति नाद वपु, ता(मधि)[41] इन दल दीय ।।28।।

राग रंग रुचि जास तन, मन परबीन उदार ।
निडर निरामय सो सवै नवही भूप सिरदार ।।29।।[42]

नंदी गनपति नाद वपु[43], मता[44] धि इन दल दीय ।।30।।[45]

अथ षटराग नाम

प्रथम गुनीगन भैरों[46] राग उपज्यो संकर तन[47],
सुषदाइक याही ग्रलापत ते बड़भाग सो संहरन ।
विय मालकोस सुनि भयो कंरु हर्या प्रकास,
त्रतीय राग हिंडोल भयो[48] पुनि हेम गात ते ग्राभ[48] ।
दीपग (राग) चौथो भान नैन वे प्रगट भये तन दिसवान[49] ।

---

39. क—साह, ख सीह । 40. ग—सो । 41. क ख ग—मध्यि । 42. यही दोहा ३१ वें दोहे के रूप में इस पाठ में क, ख प्रति में लिखा मिलता है । 'ग' प्रति में इसकी संख्या ३० है ग्रौर दोहे का मात्र 'राग रंग रुच जास तन' पाठ ही लिखा हुग्रा है । क, ख प्रति के ३१ वें दोहे का मूल पाठ प्रस्तुत है—

राग रंग रुच जास तन, मन पीर बीन उदार ।
निडर निरामय सो सविन, वे ही भुप सिरदार ।।

43 ख—वापु 44 ख –में । 45 तीसवें दोहे के दो चरण ही उपलब्ध है । यह मात्र 'ख' प्रति में लिपित है । यहाँ हमने इसका संपादित रुप प्रस्तुत कर उसे क्रम तीसवां ही दिया है । 46 क ख—भरों । 47 क ख—त । 48 क ख—पुनि बहम गात ते पूरन ग्रास, ग—पुनिव हेम गात ते ग्राभ । 49 क ख ग—दिसवन ।

पंचम श्री श्री राग सेस महि मेघ घोरत मेघ ही जान[50] ।
अे षट राग सभाग गुनोजन गावत नारदादि मुनिको ऐ,
कै तुंवर सिरदारसिंह कहि जावत नाद ब्रह्मतन सोये ।।31।।

अथ षट राग को गुन

घनाछरी

विना ही व्रषभ धानो भैरो राग गावत हो,
गन गन फिरै[51] जिनह[52] जानत जगत हैं ।
मालकौंस गावत कृसानवरि उठ गुनो,
हिंडत हिंडोला[53] सुनि हिंडोल को गान है ।
दीपग अलापै विना दहन प्रकास दीप सु,
को व्रज लहलहै श्री की सुनि तान है ।
कहै सिरदार मेघराज सो उनत,
मेघ गरजत घटाघन वरप अमांन है ।।32।।

अथ षटराग रितुमय सवैया

प्रथम सरद प्रथम पहर मधि भैरों राग ही गावन,
मालकौंस सुर सरस ससिर रितु चोथ जाम सुनावत ।
रितु बसंत हिंडोल प्रात ही प्रथम पहर मधि गायत,
दीपग दुतीये जाम ग्रीषम रितु गावत आनंद पायतु ।
लागतु है श्री राग हैम दिन चौथेई पहर रमावत,
कहि सिरदार सारमति गाइन ते समय नहीं चूकत ।
ज्यौं बसंत रितु त्यागि[55] कोकिला सरद माहि नहीं कूकत ।।33।।[56]

दोहा

सुनो गुनी जन राग में ए बरने दस दोष ।
इनहिं त्यागि गावत गुनी, (ते) पावत सुष मोष ।।34।।

---

50 क ख—जाम। 51 क ख—फुरौ। 52 क ख—जनह। 53 क ख—हिंडोल, ग—हिंडाला। 54 ग—त्यगि। 55 छठा चरण—अप्राप्य।

अथ दस दोष कथन दोहा

ताल हीन इक दूसरो, तान हीन पहिचांन ।
तीजो कहियतु काक सुर, अपर[56] भंग सुर जान ।।35।।
बांके भौंह ग्रीवा वदन करन पंचमो एह,
छठये ज्यों गावत तबै, अधिक डुलावत देह ।।36।।
कहत सातमों भेद सुर, बिन जाने गावंत,
अष्ट कपाली सुरन ही, सुधरन चित भावंत ।।37।।
बिना समय को गायबो, और अनोसर गाय ।।38।।[57]
ए दस वरने राग के, प्रकट दोष मतिसार ।
इनहिं त्यागि गावत गुनी, तो रीझै सिरदार ।।39।।
कहत सपत सुर राग गुन, अरु उतपत[58] के देव ।
अब आगै वरनत सुघर, राग-रागिनी भेद[59] ।।40।।
राग कहै षट राग है, त्यै ही तीस प्रमांन ।
राग राग प्रति पांच तिये[60], जानत जान सुजांन ।।41।।
गात[61] वरन तन वसन रितु, भूपन रूप सुभाय ।
हाव भाव सुर जाति सौं रागिनी तोस गिनाय ।।42।।
राग सिरोमन प्रथम है, भैरव संकर रूप ।
बरनत सो सिरदार है, सुनौ सुपंडित भूप[62] ।।43।।

भैरो राग कथनः घनाछरी

अग को चरम महा नरम बिछोना किये;
बसन सुपेत होये सिध सो अनूप है ।
मुंडन की माल व्याल कंकन बिसाल,
स र ग म[63] प है सुर औडो जात सुष रूप है ।
कहै सिरदार गुणी गावत सरद रितु;
प्रात अवदात ग्रेह धेवत सो जू पहै ।

---

56 चतुरथ । 57 तीनों ही प्रतियों में दूहे के प्रथम दो चरण ही प्राप्त हैं । अन्तिम दो चरण नहीं लिखे गये है, किन्तु दसों दोषों का उल्लेख हो गया है । 58 ख—उतप । 59 ग—भेव । 60 ग—त्रिय । 61 ख—गाव । 62 क ख—चुप । 63 आठवां— पत्र समाप्त ।

तिन हन धन सीत रस्मि श्रयन भाल,
जटा गंगधार भैरों राग ईस रूप है ।।44।।

अथ चरचरी हरीहरात्मक समता वर्णन

हरिहर सम रूप घरन[64] करन मोद भारी,
गुंजमाल धरन दिव्य व्याल माल धारी ।
धरनि रदन घरन[65] उतहीं धरन सीस गंगा,
इतहीं रमा हृदय उतहीं उ वाम श्रंगा ।
स्याम वरन इतहीं उतहीं[66] गोरवरन देहा,
इतहीं कनक सदन रुचिर उतहीं (रजत[67]) गेहा ।
इत पटीर लेप उतहीं भस्म श्रंग लायै,
पीत वसन इतहीं उतहीं श्ररुन सोभ छायै ।
इतहीं संष सुभ्र[68] उतहीं डमरु करि धारै,
इतहीं चक्र उत त्रिसूल कर तीछन (धारै[69]) ।
वन उपवन रमन इतहीं उत वे वनवासी,
इत ये छल छद निसदिन[70] उत वे बल रासी ।
[71]इतइ विधि तात प्रगट उत वे विधि ताता[71],
दीनवंधु प्रगट उतहीं वेउ सुपदाता ।
दोउन के भेद भांति भांति वेद गावै,
यातै सिरदारसिंह एक चित ध्यावै ।।45।।

अथ चरचरी दूजी सुरतांत वर्णन

रात जात होत प्रात कुंज त्यागि प्यारी,
श्राई कर कुसुम लियें केलि कियै भारी ।।
बिथुरे (कच)[72] सुथरे कुच सोह नष रेषा,
मानो सिव कंचन के धारै ससि सेषा ।
पहिरी लषि श्रहिरी श्रांगी सुगंध भीनी,
पिय सो भट रूप भरी मनहु मोज दीनी ।

64. क ख—घरन । 65. क ख—घरन । 66. 'ख' प्रति में यह पाठ उपलब्ध नहीं है । 67. क ख ग—रजित । 68. ग—सुभ्र । 69. क ख ग—धार । 70. क ख—नसदन । 71-71. यह पंक्ति 'ग' प्रति में नहीं है । 72. क ख ग—कुच ।

दीपक सुत[73] नैन कुंज वार वार नावै,
चीर पलक वोड लिये[74] कालिमा लगावै ।
मुकर से कपोल मुकर बदन छब [75] देखै,
कर (पल्लव)[76] कचनि धसहि[77] वार वार पेष ।
अंग अंग आभूषन[78] फिर भूषित कीन्है,
बीते रन जीते गन ज्यूं समार लीन्है ।
सारी सलको समेटि मेटी मदन बाधा,
सझि कै सिरदार सोभ चली सदन राधा ।।46।।

धुरपद

जागि प्रात अवदात[79] कुंज तै सुंदरि वाहिर आवई,
करि रति रंग संग प्रीतम के अंग अंग छबि छाई ।
बिथुरे केस स्याम मानु अरि रहे चंद मुख गौरी[80],
मानौ दिवस डर मांनि जामिनी वारन वसी अंधेरी ।
अरुझि आइ लटकि नथ सो लट तिय ताकौ सुरझावै,
मानहु (भौंरत)[81] कीर काकोदर पंकज बीच करावै ।
आंगन फटिक देवद्रुम चौ[82] वैठी वाम अकेली,
झारी रजत गुलाब नीर भरो लाई झपटि सहेली,
अैना अैन[83] निरषि मृग नैंनी नैन आप करि धोवैं,
हरषित लोंछि पोंछि आछै पट दीपक सुमन समोवैं ।
लषि पिया सिरदार रदन छवि (दीपिका[84]) मिटावत[85] प्यारी;
चितईं हरषि चितौन तास परमीन कंज बलहारी ।।47

कवित्त ताल चौतालौ

केल रित सारी कह देत मरग जी सारी,
जरतारी कंचुकी तनी ते जान पाए हैं ।
पाइ को म्हाउर म्हाउर प्रभास प्रीत,
लाल गुहो वेनी वाल छिप्पे न छिपाई हो ।

---

73. पत्र आठवां समाप्त । 74. क ख—छीयैं । 75. क ख ग—छंद । 76. क ख ग—पलब । 77. क ख—घसहि । 78. ग—आभुन । 79. ख ग—अवदात । 80. क ख—गेरी । 81. क ख ग—भीरत । 82. ग—चै । 83. ग—सैना अै । 84. क ख—दपीका, ग—दपी का । 85. क ख—मेटावत ।

कहै सिरदार कीन्हो विपन वि[86]हार भारी,
गिरधारी संग अंग अंग छवि छाई हो।
बातन उडावती हो भृकुटी चढाइ अब,
फूल की ये फूल लीये कुंजन ते आई हो ।।48।।

ताल चौतालौ

जामिनी विहानी जागी कामिनी प्रजंक पर;
अंक भरि प्यारि चुंमि[87] बदन विदा करी ।
(अंषिया)[88] उनीदी देषि सषियां हरषि आई,
निरषि लुभाई अंग अंग रस सो भरी ।।
कहै सिरदार गज मोतिन के टूटे हार,
करत बिहार छूटै बाल मुकता-लरी ।
भान के उदयेत मानौ चंद तैं निकरि प्रभा,
तिया मुष चंद परि चढ़त घरी-घरी ।।49।।

अथ रागिनी[89] भैरवी आदि पंच रागनी नाम

चौपई

प्रथम भैरवी दुतिय वरारी,
मधुमाधवी त्रतीय सुषकारी ।
चतुर्थ सैंधवि चतुर वषान,
वंगाली सुर पंचमी जान ।।50।।

रागिनी भैरवीरूपकथन कवित्त

गैयन के पाछै पाछै काछिनी कठेठी काछ,
पीत पट बांधे गर गुंजमाल को धर[90] ।
[91]बांसुरी सुरन गावै भैरवो मोद ग्वालन,
बुलावै लाल आवै अंझ[92] को को करै ।[91]
कहै सिरदारसीह मार मद मोचनह,

86. पत्र 9 वां समाप्त । 87. ख—चंमि । 88. क ख ग—अषीया । 89. क—राग, ख—रागनी । 90. क ख—घर । 91-91. छन्द दोष । 92. ख—अोझ ।

तामरस लोचन बिलोकी दुष को हरै ।
चंद के उदये मुष तेरो चंद देखि,
रिझि आइ (व्रज)[93] चंद सिरमोर चंद्रिका धरै ।।51।।

गोरे गात सुंदर बिराजै मृग कै से द्रिग,
सिभु को रिझावै वजाइ ताल कामिनी ।
कीन्हे सेत बिछाइत बैठी वोढि सेत सारी,
कंचुकी अरुन धारी नारी इत मानिनी ।
कहै सिरदार गरै पंचक सुमन हार,
गावत सरद प्रात मध्यम सुधामिनी ।
संपूरन जाति मपि धनि सरि ग है,
सुर भैरवी विसाल राग भैरव की भामिनी ।।52।।

मुकुर कपोलन में स्वेदकन झलकत,
झलकत अंग मुकतामनि उजास तैं ।
सरद की रैन रम्य दरद गरद[94] कीन्हौ,
दीन्हौ चैन संपूरन ससि के प्रकास तैं ।
कहै सिरदार पट भूषन बिसाल (धारी),[95]
आछै[96] निरषत प्रिया वदन विलास तैं ।
मदन को मानु मलि विरह कदन करि,
चालै लाल लाडिली सदन प्रात रास तैं ।।53।।

धुरपद

बड़े प्रात इक कहत छकी छबि आजु राति हरि रास रच्यौ री ।
निरमल बुधि चांदनी जैसी तैसीई थल रास रच्यौ री[97]
चढ़ी जुत वाम विमान विलोकित देव देषि छबि काम रच्यौ री ।
गहि गहि पांनि संग गोपिन के तीन लोक के नाथ नच्यौ री ।।54।।

दोहा

सरद जु न्हाई अमल तन, कीन्हे चंदन चित्र ।

---

93. क—व्र,ह्य, ख—व्रग्रं ग—व्रहज । 94. ग—गद । 95. क ख ग—सुधारी ।
96. ग—अछि । 97. क ख—सच्यौरी ।

कृष्ण राधिका रस रमै, जमुना पुलिन[98] पवित्र ॥55॥

अथ बरारी रूपकथन कवित्त ताल

कलप तरोवर के कानन धरत फूल-फूल,
भरी कंचुकी सुपेत उर सौं गसैं।
चाहत कीयोइ (परिरंभन)[99] पीया के संग,
संपूरन जाति है षरिज ग्रेह में बसै।
कहै सिरदार स रि ग म पि धन्य है,
सुर गावत सरद[100] जाम तीसरे[1] दिवन से।
सुवरन कंकन बिथुरे रहे स्याम कच,
भैरव की नारी या वरारी रागनी लसैं ॥56॥

अंधियारी रैन उजियारी सी झलकि रहै,
तुव[2] तन जोति ज्योन्हे सबही निहार है।
मन में भरम ह्वै है जोति सज नयन,
कहु दिग् पुन्य रे[3] उत्पात जगधारो है[4] ।[5]
कहै सिरदार सारी पहरी सुपारी सेत.
कहो करि हेत प्यारी चित में बिचारि है।
चंद सो वदन लीन्हे नंद के सदन आजु.
जोतु दीपमालिका विलोकन पधारि है ॥57॥

द्वार द्वार सबहि के[6] चित्र विचित्र[7] भयो,
ताहि देखवे को तु छबीली को न जाव है।
हमसो विरोध[8] कहा (पै यतन रोको)[9],
सोध बोध धारि राधे हीय क्रोध को उपावै[10] है।
कहै सिरदार हार मानि हम रही तो सो,
मो सो आनि बात करु गात को न साव है।

---

98. क ख ग –पुलन। 99. क ख—इ पेर रिंभ, ग—इ पर रंभन। 100. ग—सद। 1. क ख—जामती, ग—जामनी। 2. क ख ग—जुव, ख—तुव। 3. क ख—के कहु. छि पुन्य रे। 4. क—न उत्पात जगधारी है। 5. पत्र ११ वां समाप्त। 6. क ख—सबह कि। 7. क ख ग—है विचत्र। 8. क ख ग—विरोद। 9. क ख—यैं यतन ऐ को, ग—यैं यतन रोको। 10. क ख—उपाव।

दीनौ सेत रंग तोहि हेत करि बाठिवे को,
हठी तु हठीली हर तार को मिलाव है ।।58।।

दुरद निहारै जरी भुलन सवारे भरि,
कारे मतवारे तउनकु न सकानी तु ।
निरषै तुरंग नर वानर कुरंग गन,
मन[11] मैं कुरंग नैनी भई रस सानी तु ।
कहै सिरदार न विचार कछु जान्यौ हम;
चित्रम विचत्र मति कहा गात ठानी है ।
बाल संग दिषि नंदलाल को रिसानीनेकु,
नेकु भौंह[12] तानी मुसकानी कौ लजानी तु ।।59।।

चौतालौ

मंजन सुगंध करि उजल बनाग्रे वेष,
उजल सुमन मालं पहिरो ग्रनंदनी ।
घसि[13] घनसार रस चंदन लगायो[14] गात,
मुदित[15] प्रभाति ही ते ते ग्राजु जग वंदनी ।
कहै सिरदार हार मोतिन के ग्राभुषन;
भूषे[16] व्रज भूपन की विरह निकंदनी ।
उजल पहरि चीर हंसन रमावत सी,
सारदा सरूप बनी व्रपभान[17] नंदिनी ।।60।।

दोहा

लाल वजाई बांसुरी, कालिंदी के तीर ।
हाल चली ब्रज बाल सुनि, सुनि धुनि बिरहत भीर ।।61।।

अथ मधुमाधवी रूप-कथन कवित्त

कुंदन सो तन ग्रै न बोलत मधुर वंन,
ग्ररुन ग्रधर चूमि[18] पीय मुष कौ महति ।

---

11. ग—मैंन । 12. क ख ग—भो । 13. ग—धसि । 14. ग—लगावो ।
15. ग—मुंदित । 16. ख—भू पे । 17. पत्र १२ वां समाप्त । 18. ख—चाम ।

काम कामिनी[19] तै लीनी अ्रग ते सलोनी,
आंप[20] रस भरी भुजपास भरी[21] पिय को गहती ।
कहै सिरदार सोहु नेम सो वसन[22] पीत,
संपूरन जाति मपि धनि सरिग कहति ।
मध्यम सुधाम जाको गावत सरद प्रात,
लाल को मगन मधु माधवी सदा रहति ॥62॥

कीन्हो तन मंजन लगायो द्रिग अंजन,
चित कै कंज षंजन के पुंजन दहति है ।
अतर अरगजा मंगायो[23] सो लगायो,
अंग अंग मुक्तान भरी परी उमहति है ।
कहै सिरदार साजे सकल आभूषन है,
यातैं ब्रज भुषन जु रावरी कहति है ।
सुनिवे सुजान वन गायन चरावन को,
आजु व्रषभान सुता आवन चाहतु है ॥63॥

सिर पै गिरद डारै दुरद पुकारै परै,
भरै (जातो)[24] जात गात वास वन मैं लीयौ ।
हाल ही प्रवाल को वदन विरंग भयौ,
अंग अंग हेम जरि अंग आगि में दीयौ ।
कहै सिरदार पीक स्यामल सरीर कीन्हौ,
कटि हीनो कंठी रव लीन्हो वन को भीयौ ।
कारन कहारी तोहि बोलत विहारी नारी,
ऐ री चंद्रमुखी तु कलकी चन्द्रमा कीयौ ॥64॥

(और)[25] की कहा है हेत जिन सौं महा है हाल,
लाल वाही देषि वाल सबही बिसारोगे ।
बांसुरी सुरन गीत वाही के मगन गहो,
वाही की गली में[26] निस बासर विहारोगे ।
कहै सिरदार जग वासो हिल मिलैगै हो,

---

19. क ख ग—कामनी । 20. क ख—आष । 21. क ख ग—भारि । 22. क ख ग—हमे मसो वसन । 23. क ख ग—मगायो । 24. क ख—जाभ, ग—जाव । 25. क ख ग—ओर । 26. क ख—म ।

ग्रनत न जहो तब वाही डर धारोगे ।
वाही छिन चैन ब्रजचंद ग्रैन नैन पै हों
राधिका को मुख चंद जा छिन निहारोगे ।।65।।

चंपक वरन ग्रंग कंचुकी सुरंग सोहे[26]
कोह रति रंभा (सचि)[27] दीजै जो वडाई है ।
तन सुख सारी वोढै तन सुकुमारो वाल,
देखो जोति जाहिर जवाहिर की छाई है ।
कहै सिरदार कीजै विपिन विहार यासौ,
लीजै भरी ग्रंक छाहि कदम सुहाई है ।
देति न दिषाई[28] हाल व्रषभान जाई लाल[29],
देखो सो नवेली ह्वै ग्रकेली वन ग्राई ।।66।।

दोहा

कुंज भवन कामिन खरी, रति सम सुन्दर ग्रंग,
नंदकुमार ग्रनंग[30] तन, मिलि कीजै रति रंग ।।67।।

अथ रागिनी सैंघवी को रूप-कथन कवित्त

सरद दिवस ग्रंत स रि ग म विध[31] नि में,
गावत सरद ग्रह संपूर समाने है ।
बंधु जीव फूल की छरी लीये त्रिसूल खरो,
मन में न भरी सिव पुजरी सधाने है ।
कहै सिरदार पट छु तरुन धेन्है,
रेनि दिन चाह[32] रति पति हितु ठानै है ।
मुरति विसाल राग भैरवी प्यारी वाल,
सैंघवो को रूप ग्रैसो जगत बखाने है ।।68।।

मोर-पखान किरीट विराजत,
वखानै[33] है ग्राज हार प्रसुन सुहाई[34] ।

---

26. क ख—सोह । 27. क ख—सोह, ग—रुचि । 28. ख—दिखाहा 29. ख— दै ।
30. क ख ग—अनंम । 31. ख—धा 32. ग—वाह । 33. क ख—
हार प्रसून सुहाई 34. पत्र १४ वां समाप्त ।

लाजत है दुति देषन मै,
न[34] लषै सरसि सह नैन[35] लजाये ।
मोहन है सिरदार सब,
जग ग्वाल सब नट वेष बनाये ।
वापै[36] भरी मनु देष अरी,
वनि के वन तैं व्रजभूषन आये ।।69।।

कीनै सिंगार उर पहरे सुमन हार,
गूंथै सिरवार धूप दे करि अगर की ।
संग में सहेली लीयै हीयै अनुराग कोयै,
तलफत द्रिगन दिसि दीनै है डगर की ।
कहै सिरदार मारतंड रथ दीसत न,
चलीयै सदन छांह छांडि ए कगर की ।
मदन मोहन स्याम रावरे दरस काजि,
सदन-सदन सजी सुंदरी नगर की ।।70।।

ताल चौतालौ उलटौ

नटवट वेष तन अरुन घर निरषतै,
सोइ विराजत मुकट मोर पर को ।
आनन दीपत मानु संकर को आभूषनं,
गुंजन को हार उर सोह च्यारु सर को ।
कहै सिरदार रूपमार तैं अनूप सोहै,
को है[37] जो न मोह देषि गोकुल नगर को ।
खैवो न सुहात दिन रात षरकत हीयो
गैयन को अइवौ गुन गैवो गिरधर[38] को ।।71।।

ध्रुपद

कीयो सषी अंगराग राधिका हर आवन की ।
वार भई केसर आड़ जराव बैंदी सोहत दुति मुष चंदवई ।।

34. पत्रांक १४ समाप्त । 35. ग—न । 36 क ख—चावे । 37. 'ख' प्रति में—यह पाठ लिपित नहीं है । 38. ग—गिर अधर ।

मानो सरद चंद्रमा के कर लाल रसाल मसाल दई[39] ।
जावक[40] रंग दीयो पद पंकजन नैनन ग्रंजन रेष ठई[41] ।।
पहिरै ग्रंग ग्रंग ग्राभूषन ब्रज भूषन ग्रनुराग मई ।
सारो सेत रंग जरतारी मानु चपला मोल लई ।।
सषी[42] संग लै चढ़ी ग्रटारी जोवत मग छबि पुंज छई ।
सुरभी लीये उत नंद नंदन ग्राई गावत मोद मई ।।
कहै सिरदार मार तैं सुन्दर लषि सुन्दर मुसकाइ गई ।।72।।

देषत डगर नगर की वनिता नंदनंदन कब ग्रावैंगे ।
नटवट वेष कीये हरषित म[43]न गायन हरषि बुलावैंगे ।
मोर किरीट गरे वनमाला ब्रज वीथिन छबि छावैंगे ।
ग्ररुन कमल दल द्रिगनि चहुं चितउत चितु चुरावैंगे ।
[44]कहै सिरदार वांसुरी सुर ह्वै सब निस हेट सुनावैंगे[44] ।।73।।

दोहा

साँझ[45] समै सजि ग्रारती, ब्रज वनिता ग्रभिरांम ।
पग जोवत मग नेह सौं, कब ग्रावै घनस्यांम ।।74।।

अथ रागनी बंगाली रूप-कथन कवित्त

भूषित विभूषि तन (बंधि)[46] जुट के सघन,
कर में त्रिसूल देषि मुनि ललचावहीं ।
सोभा ईकी[47] हद कीये तिलक कुरंग मद,
कुंकुम कलित सारी भारी छ्बि पात्रहीं ।
कहै सिरदार रहै षरिज ग्रेह संपूरन,
स र ग म पि धन्य सपत सुर ग्रावहीं ।
उपजै षुस्याली चित सरद मैं चौथे जाम,
बंगाली विसाल बाल गुनी जब गावहीं ।।75।।

तूं ग्रबहीं तें उठि ग्रकुलाई वेचाई[48],

39. ग—मसालई । 40. ख—जाक । 41. ग—रेषई । 42. क ख—सषो । 43. पत्रांक १५ समाप्त । 44-44' 'ग' प्रति में यह पंक्ति नहीं है । 45. ग—साभ । 46. क ख ग—वधि । 47. क ख ग—कि । 48. ख—चाई ।

घरै वन गायन चराई है[48A]
[49]ज्योंहि दिनेस जब दिसि वारुणी[50],
वितव धाम कु' चितु चलाई है[49] ।
श्री सिरदार महिपति के पत,
ग्वालन के संग मोद वनाई[51] है ।
गाईह गीत अलो मन भाई है,
सांझ समै मनमोहन आई है ।।76।।

ताल बिलम्बित[52] ध्रुपद

चढ़ो अटारी देषो प्यारी, आवत वे[53] वनमाली,
गावत विमल संग ग्वालन के मुरली सुरन बंगाली ।
सुरभी सकल कीये[54] मुष आग घोरी घुमर काली,
चरचा करत तिहारी कानर कहत बाल सौं आली ।
यह सुनि चढ़ि परिकार हसि राधा सहित षुस्याली,
नूपुर सब्द कर[55]त चालत मग सुनि धुनि लजत मराली ।
षरी भरी अनुराग चांदनी चदहुं ते सुरसाली,
दीयो दरस सीरदारसाह प्रभु रीति[56] रसपाली ।।77।।

कवित्त

मंजुल मुकट माथै राषि मोर पंछिन को,
नटवट भेष गात रुचिर वनिवो करै ।
भ्रकुटी चढ़ाये लाल लकुटी फिराये चित,
चाई मुसकाइ संग ग्वालन कै गैवो करै ।
कहै[57] सिरदार चांदनो होत बाल षरो,
अनुराग भरी नैक ता तन चिवौ करै ।
सुरभी[58] चराये[59] राधिका की गली आइबो[60] करै,
[61]सरद सांझ कौ दिषाई लाल दैवो[61] करै ।।78।।

48.A क ख ग—हौ । 49-49. यह पद प्रति 'ग' में नहीं है । 50. ख—वाकर्ण । 51. क ग—वनई । 52. क ख ग—बिलंदी । 53. क ख—दे । 54. 'ग' प्रति में 'कीये' पाठ प्रतिलिपित नहीं हैं । 55. पत्र १६ समाप्त । 56. 'ग' प्रति में यह पाठ प्रतिलिपित नहीं है । 57. क ख—कहौ । 58. क ख—सुरसी । 59. ख—चरायो । 60. क ख - अैवो । 61-61. 'ग' प्रति में यह पंक्ति नहीं है ।

चांदनी पषरी अनुराग[62] भरी राधा आई,
वाकी छबि चाहि हीये उपज्यो आनंद[63] जु ।
तोरी गुञ्जमाल लाल दीन्ही गुञ्ज वगराये[64] कीनी[65],
गुञ्ज वगराई कीन्हीसुघराई[66] बाल हेत सुषकंद जु ।
कहै सिरदार लागै वीनन प्रवीन गुञ्ज देषी,
छबि पुञ्ज छकी कीये अैसे छंद जू ।
आज व्रषभांन जू की पौर आगै सुषकंद,
जो लौं[67] उभो चंद तो लौं रमे नंद नंद जू ।।।।79।।

इति श्री महाराजसुरताणसिंघजी सुत राजा सिरदारसिंघजी विरचिते सुरतरंगग्रन्थे राग भैरव भारज्या वरणं[68] नाम प्रथम तरंग समाप्त ।

अथ राग मालकौंस कथनं

सोरठा[69]

बंसी सुर गावत विमल, वंगाली सुरकंद ।
आवत ते ग्वालन लीय[70] ग्वालन जुत[71] नंद नंद ।।80।।

अथ मालकौंस रूप कथनं कवित्त

तन (अभिरांम)[72] गोर वसन लसंत स्याम,
सुमन सुगंघ वारी छरी कर छाजहीं ।
बड़े गज मोति[73]न को माल सोभ[74] देत हीय,
भयो हरकंठ तैं विलोकि दुप भाजही ।
कहै सिरदार सरि ग म पि धन्य है,

---

62. ग—अनुरा । 63. ग—आनंद । 64. ख—वगरा । 65. क—कीही, ग—कीन्ही । 66. ख—सुघिराई । 67. ख—छो । 68. क ख ग—वरंनं । 69. प्रति क, ख में यह पद 'सोरठा' शीर्षक से अंकित है, जबकि रचना की दृष्टि से यहां दोहा छंद है । इन दोनों प्रतियों में इसका क्रम नहीं दिया गया है । इसके नीचे पुनः 'दोहा' शीर्षक से यही छंद अंकित है और उसकी क्रम संख्या ८१ दी गई है । 'ग' प्रति में यह छंद लिपित नहीं है । संशोधित क्रम में यहां इसे ८०वां क्रम दिया जा रहा है । 70, क ख—लीये । 71. ख ग—सुत । 72. क ख ग—अभरांम । 73. पत्रांक १७ समाप्त । 74. क ख—मालासोभ ।

सुर[75] परिज सदंन जाति संपूरन बानही ।
ससिर निसा मै जाम चौथे गाईयतु[76]
केलि करत तीयान संग मालकौंस राजही ।।81।।

कवित्त तितालो

पंभेदार रावटी तनाई रंग महल में,
पहले सुगंध भीने बिछाई सुरीत में ।
परदा ललत डारे लाल मुख (मतवारे)[77]
सगरी प्रजा री मलि आगर पुनीत मै ।
कहै सिरदार झांपि झांपि[78] रू झरोषा जाल,
लाल बाल पौढ़े री प्रजंक भरि[79] प्रीत मै ।
अनंत कौ मांन भये तन ही मै तन गो,
वै लपटि लपटि[80] सोवै ससिर के सीत मै ।।82।।

कवित्त

चंदहु[81] न देषै मारतंडहु न पेषै जाहि,
ताह छल छंद फंद रच-पुच ल्याव कौं ।
अंग अंग जाहि रज वाहिर सो जटी सदा होइ,
तो न होइ नटि दै करि रिझावै कौ ।
कहै सिरदार लागी तुम चित चटपटी,
ह्वै अटपटी जाको भेद कोई पावै कौ ।
होत न अकेली संग रहत सहेली लाल,
अलबेली बाल तल वेलो कीये आवै कौ ।।83।।

अथ मालकौंस की भारज्या

सोरठा

तोड़ी[82] गोड़ी जांन, गुनकली रे षंभाईचो ।
और ककुभ वर तान, मालकौंस तीये पंच ये ।।84।।

---

75. क ख—सु । 76. ख—गाईसतु । 77. क ख ग—मलवारे । 78 क ख—झापि । 79. ग—परि । 80. ग —लपटे । 81. ग—चनदन हूं । 82. क ख—टोटी ।

अथ गौड़ी रूप-कथनं कवित्त

वदन सुधा नितै वचन सुधसि[83] कह,
तनसुष मार मिस वरषै क्षटाक कांमी।
कलित कपूर तन कांमरस भीनी मन,
उजल वसन हीय कंचुकी लसत स्याम।
कहै सिरदार विन सिव कौ सुनावै षरी
संपूरन जाति सुर परिज[84] में कीन्है धांम।
स रि ग म पि धाम, ससिर दि[85]न दूजे जांम,
गावत सुहाग भरी गौड़ी मालकौंस वांम[86] ।।85।।

कवित्त ताल दुतालौ[87]

आंगन फटिक तामैं चंदन की चौकी पर,
इकहरी[88] चांदनी रूचिर सेत तानी है।
कनक कलस वड़े वनक के भरि भरि,
आन धरै सषोयन सुगधित पानी है।
कहै सिरदार वरनाइ निसि जोवै जोवै,
चाइन सो मुप चंद जांति रस सानी है।
माह की दुपहरी में नाह में सनेह भरी,
आनंद सो मंजन करत राधा रानी है ।।86।।

ध्रुपद

करि मंजन व्रषभांन नंदनी बैठी चंदन चौकी।
अंग अंग प्रति निरषि वारिये सोभा सारद सौं की।
लटके केस वेस सटकारे[89] कारे घन[90] घुंघर वारे।
मानो अमी हित वदन चंद को चाषत पनंग वारे।।
आषै मनो वार सुत पाषै निरषत टोना।
तिनके मध्य दीयौ दीपक सुत सुन्दर·· सलोना ।।

---

83. ग—सुधा से। 84. ख—वरिज। 85. पत्रांक १८ समाप्त। 86. ख—वान।
87. ग—कवित्त ताल दुजि। 88. क ख ग—ईकहरी। 89. ग—सटकरि
90. क ग—धन।

कर सिंगार सरस सो रहो त्ये आभूषन दस दोई ।
घेरदार घाघरो घुमारो सारी केसरि मोई ।।
चोवा भर्रा कंचुकी पहरी केसर आड़ सुधारी ।
कहै सिरदारसीह ले दरपन रूप निहारत प्यारी ।।87।।

जिनकी बिलोकी छबि उपमा लगावै कव,
मीन ते निपट दीन जगत बिदोते है ।
पंजन जमातिन ते रंजन अनेक भाई
गंजन करत कंज पुंज-पूंज मदरीते हैं ।
कहै सिरदार पंचसर के प्रगट पंच-
गुनन को लीने चीने करन अतीते हैं ।
[91]चंचल तुरंग मानौ काज ए[92] सुरंग डोर,
प्यारी तेरे[93] नैनन कुरंग गन जोते हैं[91] ।।88।।

गौड़ी रूप-कथनं

स रि ग म पि ध नि षरिज ग्रेह संपूरन,
गाइये सर[94] द दिन चौथै (जामनी)[95] कहै ।
सोहे[96] ससि आनन पर कानन घर अंब कली,
पिक बैनी दैनी मोद बोलत तनक है ।
कहै सिरदार अंग स्यामल वसन सेत,
गावत सुघारी[97] गुनी पावत कनक है ।
पूरन सुहाग भरी (बिधना)[98] बनाई ऐसी,
मालकौंस राग तीय[99] गौरी को वनक है ।।89।।

दुतालौ

सीस मोर चद्रका प्रकासै कोट चंद सम,
मुरलो अधर गावै गोरी सुर सार है ।

91-91. प्रति 'ग' में ये पंक्तियां लिपित नहीं है । 92. क ख—काए ज । 93. क ख—वेरे । 94 पत्रांक १९ समाप्त । 95. क ख ग—जामन । 96. क ख - सोह । 97. ग—सुधारि । 98. क ख—गबिध ना (पाठ स्पष्ट नहीं है) । 99. क ख ग—तीये ।

पवन के जोर फहरात आवै पीत पट,
चपला चपल मानौ लागी मेघ लार है ।
कहै सिरदार भाल तिलक विराजमान,
वारो पंचवान गर गुंजन कौ हार है।
चढ़तु अटारी व्रषभान की दुलारी देषि,
सेत घन माह घनस्यांम की वहार है ।।90।।

देषि स्यांमसुंदर छबि सजनी धेन चराये आवत री ।
ग्वालन लीयं कीयै नटवट तन गोरी सुरन सुनावत री ।।
गोरज भीनी सुलफ जुलफ छबि (मेरहु)[100] मन भावत री ।
मोर मुकुट सिर लकुट लाल कर पीत बसन छावत री ।।
गाइन बिछुटे जात गोवन तैं ताहि[1] चाहि गहि लावत री ।
केलि करत वन लता ललित तन लगी पेम सु वतावत री ।।
निरषि निरषि सिरदार सोभ तन जग द्रिग आनंद पावत री ।।91।।

नंद नंदन[2] को[3] कब देषो ।
सिर पर चीरा तस पर हीरा मानक जड़े असेषो ।।
मोती बड़े कानन मो विच लालरिया[4] अब रेषो ।
तरुन तामरस अरुन द्रिगों की समता मीनन भेषो[5] ।।
घायल किया हीया सुनि सजनी रजनी द्योसक[6] रेषो ।
मुष में वीरा सुमन सरीरा चलता गज गति सेषो ।।
कध दुसाला मोत्यें माला रूप रसाला पेषो ।
सोधा भीना नीमा झीना वीना [7] जान अमेषो[8] ।।
निरखे जदि सिरदारहि[9] द्रिगहिं जीवन का फल लेषो ।।92।।

वह नंद का फरजंद देष्या जात गोवन संगरी ।
सिर मुकट वेस सिषंड[10] पर का स्यांम सुंदर अंगरी ।।
गज सुंड सो भुजदंड चंड अभंग गात त्रिभंग री ।
मुष कमल दाड़िम बीज से रद अधर विद्रुम रंग री ।।

---

100. क ख ग—मे रहुं । 1. ख—नाहि । 2. ग—नंद । 3. क ख—का ।
4. ख ग—ललरिया । 5. ग—पेषो । 6. क ख— द्येसक । 7. क—वीझा ।
8. पत्रांक २० समाप्त । 9. क ख— सिरदावहीं. ग—सिरदार । 10. ग—सिंषंक ।

कछनी कस[11] कटि पीत पट अटपटी चाल मतंग री ।
पय पाल अंग बिसाल सुरति लजत[12] देषि अनंग री ।।
उर मुक्तमाल (सुघर)[13] मानहुं[14] मिलि रविजा[A] गंग री ।
जब ते लष्या हो ह्वै रही तब ते मनोचित भंग री ।।
वरसो लग[15] सिरदार वही तिय[16] वार होई उमंग री ।।93।।

सांझ समै हरि बाहिर आये[17] ।
पहु पहार पहुंची पौहपन की गजरा सुंदर सुमन सुहाये ।
केसरि रंगी पाग ता ऊपर सिर सोभा मय सुमन बनाये ।
पंषा पहुप करत परिचारक पुहप गेंद करि कंजन भाये[18] ।
अंगद भुजनि पुहपमय सोभत पुहप झगा दावन छवि छाये ।
फेंटनि फेंटनि बांधि पींतांबर पहुप हार जा[19] पर लटकाये ।
चरन कंज रचि पहुप पांवरी षरे लाल सबके मन भाये ।
लैन सुवास रासि तिनकी तह अलि सरदारसीह द्रिग ध्याये ।।94।।

अथ गुनकली-रूप कथन

प्रानपति[20] नहीं पास मनहुं मलिन वास,
दीरघ उसास लेत छीन तन ज्यों छली ।
नैनन ढरत नीर भीजी जात अांगी चीर[21],
[22]धीर न धरत[22] कुमलात कर ज्यों कली ।
कहै सिरदार नि स ग म पि निषाद ग्रह,
ससिर[23] मैं गाव[23] प्रात ओडौ जात है भली ।
विरह व्यथा[24] सो चढ़ी है [25](कुदम तरु)[15],
मालकौंस राग प्यारी[B] अ रागनी गुनकली।।95।।

रंच न[26] भरी सेझ सांवरे सो रति कर[27],
फूलक सी दरी पीय भरी अंक भामिनी ।

---

11. ग—कछ। 12. ख—लजता। 13. क ख - सुठार, ग —सुगर। 14. ग—मानोहु। A. ग —रविजी। 15. ग—लगे। 16. ग—तिये। 17. ख—आयि। 18. ग—भाई। 19. क ग—ता। 20. ख—प्रानपति। 21. 'क' प्रति में 'चीर' पाठ प्रतिलिपित नहीं है। 22-22. ग—चीर धीर न धरत। 23-23. ग—गाव। 24. क ख—वथा, ग —विथा। 25-25. क ख—कुदमत, ग—कदबतर। B. ख—सारी। 26. क ख—रनचन। 27. पत्रांक २१ समाप्त।

आसन आलिंगन[28] अनेक भांति चुंबन,
करत विपरीतिन रिझाई गज-गामिनी।
कहै सिरदार हार मोतिन के टूट गये[29],
छूट[30] गये बेनी सुष सनी इत भामिनो[31],
पलक सो पल लागी विरह वियोग पागी[32],
जामिनी बिहानी लागी बिलषांनी कांमिनी ।।96।।

उस मोहन दी लगनी अंषिआं,
जिन देषिन बिन भई है दिवानी।
[33]परदारा परदा अंदर दी,
मलबे को मांगत तन पंषोआ।
षान पान भूकी[33] द्रक भामिन,
तलफत है जु जल बिन झषीआं।
हुवा अमल सिरदार मुहचन(?) दर,
सदा घुमत जग मरजादा नषीआं ।।97।।

ख्याल ताल

सुन बे[34] अहीर दी जाई।
तेरे नैनां[35] दी तीषी नोकां [36]चुभि तनि[36] आई।
घाइल[37] हुवा विहाल फड़फड़ मेंडा[38] कन्हाई।।
मति बे[39] पीर होई सुणै कमली दे चली दिषाई।
तौ[40] पाव सिरदार स्यांम दिल तौड़ा[41] क्या जाई ।।98।।

धुरपद

अनोषो मान तेरो री।
मिटत नहीं ज्यों आई सपति पर चित्रड़ फेरो री।

28. क ख ग—अलिगन। 29. क ख—टूटे गई। 30. क ख—छट। 31. क ख ग—भानिनी। 32. ग—ज़ागि। 33-33. इस पाठ के पूर्व क ख प्रति में एक पंक्ति 'फिरदी गलिन गलिन बिन सषीआं' लिपित है जो 'ग' प्रति में नहीं है। 'ग' प्रति का पाठ इस प्रकार है—"परदारा अंदर दी, मलवै को मांग तज न पंषिया।" 34. क ख ग—वे। 35. क ख ग—नेनो। 36. ग—चुमित। 37. ग—चाहिल। 38. ख—मेमा। 39. ग—त्रि। 40. क ख ग—तो। 41. क ख ग—तेड़ा।

बीती रैन थकी सषीग्रा सब करि करि फेरो री ।
मान ग्रजौ व्रषभान नंदनी होत सवेरो री ।
तो किन नेह ग्रान सौं[42] रापत ना हरि मेरो री ।
भये[43] रहत सिरदार सदा ही तो[44] छबि चेरो री ।।99।।

अथ षंभाइची रूप-कथन[45] कवित्त

ताल

सिसिर निसा मैं जाम तीज गाइयतु[46],
(ध न)[47] स रि ग म धैवत सुधाम बसत[48] है ।
षाडो जाति पीक बैनी ग्रगनैनी दैनी मोद,
सुंदर सुघर रंग राग मैं मसत है ।
कहै सिरदार सीसफूल टीको भाल,
जल सुत माल हरी कंचुकी गसत है ।
पहरी कसुंभी सारी ग्रतिही पिग्रारी नारी,
षंभाइची मालकौंस राग की लसति है ।।100।।

कवित्त तितालौ

सुन्दर सलौनी गज गौनी नौनी नवला को,
सब लाई लाई सषियां[49] ज्ये संग की ।
[50]चंद सो वदन सुष सोभा को सदनबीज
दाड़िम रदन नैन मदन निषंग की ।[50]
कहै सिरदार उर हार पहिराई चित्त,
चाहै सो षवाई सोह भौंहन[51] ग्रनंग की ।
ग्राई रति धाम पति पास ग्रभिरांम सेभ्र,
सोह ज्यो ग्रनंग ढिग सुंदरी ग्रनंग की ।।101।।

---

42. क ख ग—सो। 43. क ख ग—भय्ये। 44. क ख ग—तो। 45. क ग—कथं। 46. क ख ग—गाईइतु। 47. क ख ग—धन। 48. ख—सत। 49. क ख ग—सषिय्या। 50-50. 'ग' प्रति में यह पाठ इस प्रकार है—"चंद सो वदन नैन मदन निषंग की"। क, ख प्रति का संपादित पाठ ही यहां दिया गया है। 51. ख—भोहनु, ग—भोहउ।

ष्याल ताल

रंगीली रंग मनवै प्रीतम[52] सों ।
सषी हाथ सो लेत सुराही आपणै प्याला भरि आणां छै ।
मैं बालम दी प्यारी नारी अवर[53] नहीं पहिचान छै ।।
(कदैक)[54] जाइ लगत पी इही इसो तदि जीये आनंद ठान[55] ।
सुमन सेज सिरदार छकी छबि हाव भाव रस ठान[56] छै ।।102।।

ताल

सलौनी सेझड़ी ल्याई ।
हाथी हथा सिंगार चाके रस वलै ले दरपन धाई ।
पान षवाई दिषाई सिरीमुष बातन समझाई ।।
धरत अग्र डग परत पीछ पग तहा सो हरषाई ।
लै निसंक सिरदार अंक अब कीजै मन भाई[57] ।।103।।

अथ रागनी ककुभ रूप कथन कवित्त

ताल[58]

ध नि स रि ग म पि कहत जात संपूरन,
धैवत सदन प्रिय संग रति कीन्ही है ।
द्रिगन उनीदी है दलित अंग आभूषन,
मलिन[59] बसन आंगी दर कीन दीनी[60] है ।
कहै सिरदार छूटै बार टूटै उर हार,
कर की बलय कामरस भीनी है ।
अरुन सरोज हुते, अरुन नयन ये हैं,
रागिनी ककुभ मालकौंस की प्रवीन है ।।104।।

---

52. ख—प्रीतमा । 53. क ख ग—अवर । 54. क ख ग—कदी इक । 55. ग—गन । 56. ग—गन । 57. क ख प्रतियों का पाठ सुवाच्य नहीं है । 'ग' प्रति में क ख प्रतियों का अस्पष्ट सां' पाठ प्रतिलिपित नहीं हैं । 58. पत्रांक२३ समाप्त । 59. क ख—मलित । 60. ग—चीनी ।

कवित्त ताल चौतालौ

सारी निस प्यारी पिय[61] पौढ़े चित्रसारी बीचि,
कांमरस भीने दोऊ हाव भाव ग्राने हैं।
दोऊ ग्रंक भरे डार डार भुजपाश गरे,
हरे मन दोऊन के दोऊ रस साने हैं।
कहै सिरदार हार दोऊन को पहिरावै,
दोऊ रीझि रीझि सुन ककुभ की तानें है।
केलि के ग्रघाने दोऊ दोऊ के समाने हिये,
सिसर निसा में पट ताने लपटाने है ।।105।।

धुरपद ताल

रजनी माह की सरसात।
नाह बदेस बेस कब सजनी मो पर रह्यो न जात ।।
देव-देव भूषन तन दाहत भेद न कहत बनात।
परम भागवत बंधु बंधु प्रिये नहिं नैनन नियरात ।।
मो तन ग्रांच नहीं चाहत सषी ग्रंगीठी रात।
छीरसमंद-तनयापति बाहन ता वाहन बिलषात ।।
उरग लता कदली[62] सुत ग्रगमद ग्रतर न[63] ग्रंग सुहात।
तेग तीर सम लागत तीछन बहत त्रिबिधि गत बात ।।
ग्रचला चरन हार चर बोल तब हियरा सियरात।
बिन देषै सिरदार कान्ह छबि तिन सरीर पियरात ।।106।।

ताल

मो तन सीत व्यापत पीये[64]।
लेहु लाल उठाय सीरष लाय हिय सोहीये ।।
ग्रधर ग्रधर लगाईये षरि जानि ऐहि जीये।
लषिये बिचत्रई चित्र चित्रत रहि पीय मिलि तिय ।।

---

61. क ख ग—पिये। 62. क ख—कंदली। 63. क ख—ग्रतरन। 64. पत्रांक २४ समाप्त।

निस[65] माह की बहु भाँति सीतल बहत नंदन[66] बीये ।
मग जाल ह्वै तन जानि........[67] तन रूहईये ।।
लषि मान बस सिरदार स्यांमहि राधिका यह कीये ।
धरि मुकतमाल उठाई वांसो फेरि हरि उर लीये ।।107।।

तान

मोहन के नैना वांन री ।
लागै आंन अचानक मो तन[68] धीर धरत नहीं प्रान री ।।
लोक लाज बस षरी सषरी घूमत[69] घायल मानरी ।
साँवरी सुरति माधुरी मूरत कोई दिषावो आंनरी ।।
मिलौ दौरि सिरदार अंक भरि अनत देहु न जान री ।।108।।

इति[70] श्री महाराज सुलतानसीहजीसुत राजा सिरदासिंहजी विरचिते[71] सुरतरंग ग्रन्थे राग मालकौंस भारज्या संजुक्तवरननं नाम दुतीयो तरंग समाप्तः ।।

अथ राग हिण्डोल रूप कथन, कवित्तः-ताल

पीत रंग अंग अंगसुन्दर अनहुंतै[72]
कवक हिंडोरे जाहि सुन्दरि झुलावहि ।
भयो ब्रह्म तन तें अनंत रस भीनो सदा-
जतन सौ बैठी गीत सुंदरी सुनावही ।
कहै सिरदार सीस मुकुट बिराजमान,
षरिज सदन द्रिग देषत लुभावही[73] ।
स री ग म पि सुर बसंत दिन पैलै जाम;
ओडौ जाति रुचिर हिंडोल राग गावही ।।109।।

---

65. क ख ग—नीस । 66. ख—नंद । 67. क ख—जानिपस्सत (पाठ अस्पष्ट है) 68. ग—मोतब । 69. क ख ग—घुमत । 70. क ख ग—ईति । 71. क ख ग—बीरचिते । 72. क ख—अनहुं तै, ग—अनंग हुतै । 73. क ख—लुभावै ही ।

कवित्त चौतालो

फूले हैं पलास वेलि कोइलें हुलास भरी,
कहु कहु[74] कहु सबद बसीकर मंत की
मोरी अमराई लाल किसलय नजरि आई,
धाई पंक्ति[75] मधुप गुन्जार रस रत की।
कहै सिरदार आजु प्रात ही ते नारी नर,
चरचा करत गही चावरत कल की।
त्रिविध समीर आजु आवत दिगंत ते,
जानत हो आई रितु रुचिर बसंत को ॥110॥

धुरपद ताल

रितु बसंत की आई माई।
सीतल मंद सुगंधहनु पित वहत सुगति सुषदाई ॥
मधुकर डोलत परि भरत बोलत मौरी लष अमराई।
अरुन पलास बिलसत जित तित[76] सोभा वन-वन छाई ॥
नर नारी गावत प्रीत में फेरि तान हिंडोल सुहाई।
फिर आजु सिरदारसिंह कहै न्रप मनि मदन दुहाई ॥111॥

सजनी रितु बसंत क्यों बीते।
बूझत विप्र धरत सगनौती बासर[77] नीठ बतोतै ॥
आंनि आंनि दासी कौ बन की कुकत अति अनते[78]।
(बूझि बूझि)[79] आवत मन रजनी सुनि सुनि आनंद गीते ॥
मोरे जाल रसाल साल भई जब अंकुरन पुनीते।
अरुन अरुन की सुकमनी भ्यानक उर उपजावत भीते[80] ॥
गुन्जत भ्रमर भ्रमत प्रति बोलनि बाल जनावत नीते।
कहौ दौरि सिरदार स्यांम सौं कांम बांम दल जीते ॥112॥

ताल

चलो सषी फाग षेले री।
रंग कनक पिचकारो भरि-भरि पिय पर मेलै री ॥

---

74. पत्रांक २५ समाप्त। 75. ग—पति। 79. ग—जित। 77. क ग—बासुर।
78. ख—मतते। 79. क ख ग—बुझि-बुझि। 80. ग—भीने।

फूले ज्यांहां गुलाब गुलाला ऊंची केलैं री ।
तिनकी ओट निकट [81]वह्यौ वाढी[81] हर पेलैं री ।।
फगुवा हेत पीत पट कटि तें षोलि सके [82] लैं री[82] ।
ले गुलाल भरी मूंठ कान्ह की मूठै[83] झेलै री ।।113।।

अथ[84] राग हिंडोल[85] की भारज्या कथनं

सोरठा

रामकली देसाष, (य) ललत बिलावत जानिये ।
पट मंजरी सुभाय, पांच राग हिंडोल तिये ।।114।।

अथ रामकली रूप-कथन

कवित्त ताल

सोने ते सवाई अंग रंग झलकत-नील
बरन वसन की लसन सोभ न्यारी है ।
भाल के कुरम दलित कल गाए वाल,
भूषन विसाल हेम रतन उज्यारी है ।
कहै सिरदार हाव भाव सौ विमोहै पति ।
स रि ग म पि सुर षरिज ग्रेह भारी है ।
गावत वसंत निस अंत ओडो जाति बांम,
रामकली रुचिर हिंडोल राग प्यारी है ।।115।।

ताल चौतालौ

षेलि[86] डारी रंगति किवारी चित्रसारी बारी,
जालि यों उघारी लाल परदासूं तै तसों।

81-81. ख—वहू वाढ़ी, ग—वहू ढाढी । 82-82. क ग—लौंरी । 83. ग—मुठ । 84. पत्रांक २६ समाप्त । 85. क ख ग—हिंडोल । 86. ग—वेलि ।

चांदनी विछाई सेत हेत करि मन भाई,
सषिया वुलाई बयेठाई तइ कंत सौं ।
कहै सिरदार तहां सुन्दर प्रजंक पर,
पौढ़ी संग प्रीतम कै पूरी प्रेम तंत सों
कोकिल के वैन सुनि[87] मैन मद छकी[88] ग्रैन[89],
चैन करै भामनी बसंत रैन कंत सौं ॥1116॥

ताल

पिय मोहि बदन दीजै रैन रही अब थोरी
जागी सासु ननद द्यौरानी चिग[90] ढिग[91] आई छोरी ।
ह्वै है प्रीति रीति फिर बालम क्यौं कीज तू बरजोरी,
ऐ सारो सूक सुनि रस बचना[92] बकिहैंगे जिम होरी ।
बांधो पाग सभाग गेहो पग ह्वै बोली तिये भौरी,
चूंमि बदन सिरदार स्याम हंसि लई अंक भरि गौरी ॥117॥

कवित्त ताल

चंदहू की चांदनी अमंद दुति मंद भई,
चोरैया चुहचुहां[93]नो नषत सिघाऐ री ।
दीप जोति फीकी परी परियाल बाकी घरी,
रामकली तान सुरंगी तन में गाऐ री ।
राती सोभा आसमान भासी छबि भासमान,
[93]घाम-घाम[94] बांम दधि मथना घुमाऐ री ।
रसिक सिरोमनि सलोने सिरदार कान,
[95]जानि ना परत किहुं बाल विलमाऐ री[95] ॥118॥

87-87. क ख प्रति का यह अंश 'ग' प्रति में इस प्रकार है—'मन मदन की ग्रैन'। 88. ख—लकी। 89. 'ग' प्रति में यह पाठ नहीं है। 90. ख प्रति में यह पाठ नहीं है। 91. क ख ग—ढीग। 92. ख—बदना। 93-93. पत्रांक २७ समाप्त। 94. ख—धाम। 95. यह पंक्ति 'ग' प्रति में नहीं है।

धुरपद ताल

आनंद कंदन ही घरि आए ।
मधुर अधर रस पाऐ प्रेम सों नहिं जानों किही तिय[96] बिलमाऐ ।।
[97]कैंधो[97] कछु(चूक)[98] सषि मोमे तति और सदन सुष पाऐ ।
कैंधो सषा समाज न छूटैं तरए[99] रंग लहि हास सुहाऐ ।।
नभ लाली दरसी रिसी[100] चाली आली तमंचर सबद सुनाऐ ।
रसिकराय सिरदारसिंह प्रभु बहु नायक सांची[1] मन भाऐ ।।119।।

अथ देसाष (देवसाष) कथन

दीसत भयानक सरीर षरे रोम तन लांबी[2],
अति अंग-अंग भोई वीर रस में ।
दीनौं दुष सौतिन कौ भारी रति हेतन री,
न्यारौ केलि ये रहत ना हरस बस में ।
कहै सिरदार पीय सपने न जान पावै,
सा रे ग म प़ि सुर सुगंध ग्रह षस में ।
ओडौ जाति रागिनी हिंडोल की देसाष यह[3],
गाइये बसंत जांम पहिले दिवस मैं ।।120।।

कवित्त ताल रूपक

जाग अंग राग कीन्हौ जावक पगन दीन्हो,
नैनन मैं अंजन लगायो[4] हाल हाल सों ।
कंचन के कलस भराऐ[5] (रंग सरसो के)[5],
केसर की बोरी सारी पहिरी षुस्याल सों ।
कहै सिरदार लै गुलाल भरी झोरी गौरी,
छोड़त कनक पिचकारी रंग लाल[6] सों ।

---

96 क ख ग—तिये । 97-97. क ख ग—केधो । 98 क ख ग—चुक । 99 ग—तरंग । 100. क—निसी । 1. ग—सोचि । 2. ग—लात्री । 3 क ख ग—येह । 4. ख—लगाये । 5-5. क ख ग—रंग के सरसो । 6. ख—ल ।

दुरके सहेलिन सों राधका नवेली आजु[7],
करि अनुराग फाग रची नंदलाल सों ।।121।।

धुर[8]पद ताल

डरो मति देषो दरपन लाल ।
पलकन पीक अधर पर अंजन वदन लागौ भाल ।।
भीनै[9] भग द्विज ससि कै बंधु दीसत न हाल ।
अचिरज मोह कौन विधि पहिरी बीनन गुन सुन्दर माल ।।
वलय[10] पीठ कंकन जुत उघटी लपटी भुज भर बाल ।
कहै देत सिरदार हाल ऐ प्रीत रीति करि लाल ।।122।।

धुरपद ताल

आए स्यांमसुन्दर भोर ।
अंग-अंग अनंग रस सौं रसे चित के चोर ।
धरत डग पग[11] परत पीछे बंधे[12] जनु रस डोर ।
सीस जावक दीयो जावक(?) निडर द्रिग नित[13] मोर ।।
पीत-पट तजि नील लोन्हो कीयौ अचिरज जोर ।
रसिकमनि सिरदार के प्रभु कहा गाऐ गौर ।।123।।

ताल

आजु कोऊ[14] चलिहै धेन चरावन री ।
हमही जात अकेले कानन दीन्है सषा न आवन री ।।
साषाअग साषा कदंब की (बेही)[15] सषा रमावन री ।
डोलत संग बोली नहीं जानत बचन अपावन पावन री ।।
सुनियौ स्यांम बचन राधा बैठी लगि बेग दधि भावन री ।
जैहो बिपिन कह्यौ जननी सों कुंज करील सुहावन री ।।124।।

7-7. यह पंक्ति 'ग' प्रति में नहीं है । 8. पत्रांक २८ समाप्त । 9. ग—भीनो । 10. म—वलाय । 11. ग—रग । 12. क ख ग—बधे । 13. ग—निज । 14. क ग—हो । 15. क ख—बेठी, ग—वही ।

अथ रागिनी ललित रूपकथन

कवित्त ताल

चंपक बरन गोरे तन धरे फूलमाल,
भूषन बिसाल द्वादस ग्रमोल की।
सोगनो सुधा नै जाकी बातें सुष दैनी तैसीए,
कंठ में दीपत लोक ललित[16] तमोल की।
कहै सिरदार ध नि स ग म सुचाल बाल,
ग्रोडौ जात धैवत सदन सुनि चोल[17] की ।
गावत बसं[18]त प्रात गुनी ग्रवदात येह,
रागनी ललित प्यारी ललित हिंडोल की ।।125।।

ताल विलंबित

रसमसे ग्रंग झलकत चिह्न चतुरंग,
रसिक रसीले जु षिलार निसि फाग के।
जावक निडर जाते जावक लगाए ग्राऐ,
मेरे मन भाये हो पलैया ग्रनुराग के ।
कहै सिरदार हार बिन गु ंजन[20] सोहै उर,
मोहै मन मेरो बन सुनत सभाग के।
मेटो द्रिग लाली भेंटौ प्यारी जो षुस्याली देह,
नाघो(?) परपंच मति वांधौ पेंच पाघ के ।।126।।

ध्रुपद ताल

सषी नंदलाल के संग जइयै ।
जमुना(तीर)[21] सुन्दर ब्रन गायन हरष चरइयै ।।
बन-बन सुमन तोरि कु ंजन मै माला रुचिर बनइयै ।
मांग ग्राइ[22] प्रीति करि मोहन तो उनको पहिरइयै ।।

---

16. ग –ललि। 17. क –चील। 18. पत्रांक २६ समाप्त। 19. क ख ग– बिलंदी। 20. ग–गुन। 21. क ख ग–तिरतीर। 22. ग–ग्रा।

गुंजमाल लीजै हर उर की उर ऊपर उरमइयै ।।
विहंसी[23] बताय स्यांम सिरदारहि वल्लिन बिच दुरइयै ।।127।।

अथ रास ताल

बजाई बांसुरी बलबीर ।
सुनि धुनि निकल भई व्रज भामिनी घरि[24] न सकत तन धीर ।।
एकन तजे[25] आभूषन भूषित एकन उफनत चीर ।
लीन्है करन कंचुकी कांमिनी पहुंची रविजा तीर ।।
ललचत निरषि चकोर चंद मुष अधर बिंब लषि(कीर)[26] ।
जाइ न सकत देषि भ्रकुटी धनइ छन तीछन तीर ।।
बिथुरत जात अवनि जल जातक लागति लतिकन[27] चीर[28] ।
मिल दौरि कर[29] नेह स्यांम सों या बिधि भामिन भीर ।।
देषि कांमवस बांम अनष धरि बोले वजन गहीर ।
कहा कंस लै गयो लूटी पुर यातें भई अधीर ।।
पतिव्रता उदित कुल को तुम क्यों यों बिकल बहीर ।
देषौ समुझि जित मैं यातौ उतरत है कुल नीर ।।
यों सुनि स्यांम बचन गोपिन के लागै अंग अंगीर ।
दह गात प[30]र दयो नोंन ज्यों यो उपजी तन पीर ।।
थकी सी गइज कसी ठाडी ढरत द्रिगन तें नीर ।
समुझि सोच तजि सकल सयाने सावधान धर धीर[31]
लगी कहन सिरदार स्यांम सों हो तुम नीठ अहीर ।।128।।

पहिलै बैन बजाइ बुलाई लै लै सबको नांम ।
आई धांम छांडि जब लागै कहन कहायत(काम)[32] ।।
तज्यो पतिव्रत कहत रसिक मनि सो हमरै पति स्यांम ।
तिनके चरन नहीं हम छांडत निसदिन आठौ जांम ।।

---

23. ग—वीह । 24. क ख ग – धरि । 25. ख—तगे । 26. क—कीर जाइ, ग—को तजाई । 27. ग—कन । 28. ग— वीर । 29. क ख—फर । 50. पत्रांक ३० समाप्त । 31. ग—धर । 32. क ख ग - केम ।

हम मैं कृष्ण (कृष्ण)[33] में हम हैं तरु-बीरज की रीत[34] ।
ता पर लाल निठुरता ठानत नहीं बिचारत प्रीति ।।129।।

येह सुनि बिहंसि उठै मनमोहन[35] लीन्ही बाल बुलाये[35] ।
[36]हेमलता मनु नील तमालहिं यों लपटी तिय धांम[36] ।।
आसपास तरुनी गन सोहै मध्य आप घनस्यांम ।
लीन्है संग मनो रति कोटिकी[37] फिरत अनुदिन[38] काम ।।
कह्यौ कृष्ण सिंगार कीजिये सुन्दरि[39] बिबिध प्रकार ।
कीजे रास बिलास सुष दये हंस रस सरद निस सार ।।130।।

जमुना तीर कदंब तट के तट ठाड़े मोहनलाल ।
सोरह सहस सिंगार[40] सो रहे कीन्है सरस बिलास[40]
(सोरह)[41] सहस कामिनी लषी हरि आवत ते धरि अंग ।
पांनि-पांनि सो जोरि छबीले नाचत[42] तिनके संग ।।
बजत म्रदंग बांसुरी बीन डफ किन्नर करतार ।।131।।

बांधि[43] नूपुर पग न्रतत उचरत मुपतंत कर ।
बिरषा करत देव पहुपन की देव वधू अकुलाये ।।
धन्य-धन्य ऐ सकल अहीरी नहीं इन सम हम आये ।
ऐक बाल ठेली ऐकन कोप[44] करि फिरावत बांह ।।
ऐके बाल प्रेम रस माती परी रास थल मांह[45] ।।132।।

उड़ि-उड़ि[46] परत (चारु[47]) आनन ते[48] रही रंच सुधि नांहि ।
मोतिन के आभूषन टूटत[49] बिथुरत मुक्तान्न द ।।

---

33. छन्दपूर्ति हेतु संयोजित शब्द । 34. क ख ग—रीति । 35-35. ग—लीन्ही बाल हीयौ लपटि लीये धाम । 36 36. यह सम्पूर्ण पक्ति 'ग' प्रति में नहीं है । 37. क ग—फोटिकी । 38. क ख ग—अनदित । 39. ग—कंदर । 40-40. 'ग' प्रति में यह अंश अनुपलब्ध है। 41. क ख ग—सोरसृ । 42. ख—नतत । 43. क ख ग—सुवन । 44. ग—पोप । 45. क ख ग—मांहि । 46. पत्रांक ३१ समाप्त । 47. क ख ग—चार । 48. ग—आनते ।

मानौ लषि ब्रज चंद सोभ तन करत निछावर चंद ।
ऐके बाल प्रेम रस माती परी रास थल मांहि ।।
तन-तन बसन बचन सुधि जिनको रही रंच-सुधि नांहि ।
सरद चंद सम आनन ऊपर रहे स्वेद कन छाई ।।133।।[50]

गहि पीताम्बर छोर चोर चित करत पौन ब्योंसइ ।
ऐकन बीरी बनाई षवावत ऐकन तन हरि चित्र ।।
छके प्रेम रस त्रिभुवन पालक प्रगटत बिबिध चरित्र ।
गोपी सरस कांमरस वोपी जानि बसि[51] भगवान ।।
जोवन रूप गरब धरि-धरि जीये लगी जनावन मांन ।
मांनकला सबके हीये अंतर अंतरजामी जांन ।।134।।

संग राधिका ले राधे बर ह्वै गये अंतरध्यान ।
अंतरध्यान गुपल होत ही गयो सकल मिटी (ष्याल)[52] ।।
हा हा कृष्ण दीजिऐ दरसन लगी कहन ब्रजबाल ।
हा मुकुंद गोबिंद नंद सुत दीजै दरसन वेघ[53] ।।
तुम बिन त्रिबिध ब्योम सुत लागत अब हमको सम तेग ।
कदम कुञ्ज मन भावन तुम बिन हमको लगेउ पावन भीत ।।135।।

निकरी दरस दीजै मनमोहन मानि पाछली प्रीति ।
विह्वल विरह भरी सब गोपी गयो चीत भ्रम छाइ ।।
जानि स्यांम भ्रम स्यांम काम री पकरत ही छन धाइ ।
जानि(गुणकी)[54] माल गुंज(कलित कलित)[55] उठबई ।।
नोई भरम भुयंग[56]म करि धरत करन सों जाई ।
कनक बेलि सी बेलिन बूझत कहु देषे(घनस्यामई,[57] ।।136।।

मोर मुकुट पीतांबर संजुत संग राधिका बांम ।
हरि कह लषे कहो म्रग हम सों म्रगनयनी जिय जांनि ।।

---

49. क ख ग —टूटेत । 50. प्रस्तुत छंद में पूर्व पंक्तियों की पुनरावृत्ति हुई है। 51. ग—वस। 52. क ख—षाल, ग—बाल। 53. ग—वेग। 54. क ख ग—गुणक्री। 55. क ख ग—कीलित कीलित। 56 पत्रांक ३२ समाप्त। 57. क ख ग—घनस्यांम।

तुम तो कहो सारिका हे सुक करि करुना म्रदुबांनि ।
बन-बन फिरत गोपिका बिलषत ढरत द्रगन ते[58] नीर ।।
गयो छुड़ाई धांम कानन मै आषर निठुर अहीर।।137।।

ऐकेई ते गिरत इक बैठत ऐक उठत अनषात ।
उतै स्यांम व्रषभांन नंदनी आनंद सो न अघात ।।
जमुना तीर-तीर कुंजन की सोभा निरषत नैन ।
कमल नैन आनंदित (डोलति)[59] लीये संग म्रग नैन ।।
इत मांहि व्रषभांन लाडिली बैठी ऐक थल मांहि[60] ।
बोली पिया गड़त पग कंकर चल्यौ जात मग नांहि[61]
सुनि मन गुनि सिरदारसिंह प्रभु जांनि प्रेम सम्बंध ।
गऐ क्षितिय करि राधिरा लिये स्यांम निज कंधि ।।138।।

तहां देषि इक कुंज छबीली फूले फूल अपार ।
परे होउ पिय लेहुं तोरि ए रचिबै को उर हार ।।
उनहुं के मनमोहन जान्यौ उपज्यो कछुक गुमांन ।
पटकि (कुंजन)[62] कुंज बिहारी जात भए तजि कान ।।
उच्च सबद करि कह्यौ राधिका हा मनमोहन लाल ।
सुनि सो स्रवन भनक ताकौ तिहि मिली दौरी व्रज बाल ।।
(कहो)[63] सुहागिन सौत स्यांम कित षोए करि रति रंग ।
दैव तोहि किहि तरुतर बैठे तो उपजै सुष अंग ।।139।।

कह्यो राधिका सुनौ सषी री महा[A] निठुर ब्रजराज ।
प्रथम कध घरि[64] मोहि प्रेम सों गए डारि बिन काज ।।
ध्रग जोवन ध्रिग जीवन जिन बिरही तू सांच यह मांन ।
आदर किये निरादर तिनकौं किंबो कर्‌यौ गुमान ।।

---

58. क ख—द्गनत । 59. क ख घ—डोलता । 60. क ग— मांहि । 61. ग—राही । 62. क ख ग—कुंजम । 63-63. क ख ग—कह्यो । A—पत्रांक ३३ समाप्त । 64. क घ—घरि, ग—षरि ।

अब मनमोहिन[65] मिलि आई फिरि कीजै वही उपाई ।
यह चित धारि रास थल सुन्दरि रच्यौ रास फिरि आई ।।140।।

बाजन लगे म्रदंग मधुर धुनि अदु मंदिल चहु ं चंग ।
बीन रबाब तमू ंरा झालरि झांझ ताल तिन संग ।।

महुवर अलगोजा[66] सहनाइ नरगह डफ करितार ।
जलतरंग कान्हरा आदिक बाजै विविध प्रकार ।।

मुकट बंधाई राधिका जू सिर कीन्हौ प्रभु को भेस ।
भाल तिलक बैजंतिमाला भूषन सकल सुदेस ।।141।

हरि सम रूप राधिका को रचि रुचिर सरूप बनाइ ।
न्रतन लगी रास थल सगरी गोपी प्रेम लगाइ ।।

साधित थुग धारि पहुप(जुही)[67] कियौ चित्त अहलाद ।
अधर[68] धारि(व्रषभांन)[69] नंदनो कीन्हौ मुरली नाद ।।

मिल्यौ आइ मनमोहन प्यारे सबद सुनायौ टेरि ।
मोहन बचन सुनत ही मोहन आइ मिलै तिहि[70] बेरि ।।142।।

(प्रफुल्लित)[71] भई गोपिका सगरी देषत छबि घनस्यांम ।
बिहंसि बिलोकि स्यांम की सुरति लागी नत ने बांम ।।

बजत म्रदंग आदि सब बाजउ(पग)[72] नूपुर इकसार ।
पढै संगीत भेद सबही मिलि मन (इक)[73] चटसार ।।

एक बिहसो एक सों हरको करत बांम रस बात ।
एकै झटकि बिलोकि लाल मुष लटकि दिषावत गात ।।143।।

एक(बोरी)[74] बनाइ बेस कर स्यांमहि देषि लजाइ ।
एक झटकि बांह एकन की लेत तमार लुभाइ ।।

लजत जात इक बांम कांम बस लपटी मोहन अंग ।
चपला मनो छांडि चंचलता(नेरत)[75] फिरत घन संग ।।

---

65. ग—तनमोहिन । 66. क ग—अलगोचा, ख—अलमोचा । 67. क ख ग—जुलि । 68. क ख—अघर । 69. क ख ग—व्रषभांन । 70. ख—तिहे । 71. क ख ग—प्रफूलीत । 72. क ख ग—पंग । 73. क ख ग—एक । 74. क ख ग—बिरी । 75. क ख ग—नेरतं ।

नूपुर सबद बाजिन के सुनत कांम अकुलाई ।
मनमोहन मन मो न आए[76] पुहप कमांन वनाई ।।144।।

मोहन रूप देषि मोहन कौ मोहि गयो तिह कांम ।
मुरछ पर्यौ धरनी[77] संजुत मनो लग्यो छबि धांम ।।
उचरन लग्यौ बदन तें अस्तुति जय जय गोकुल चंद ।
नंदकुमार मार मनमोहन जगनाइक जग बंद ।।
बसौ रास छबि संजुत मोहिये नित आनंद के दानि[78] ।
मार सजि[79] करत बंदना विध विध्र[80] रचि मधुरी बांनि ।।145।।

रह्यो बिमांन छाइ सुर मंडल हरषत बरषत फूल ।
लषि ब्रज बधुनी सुर बधु बोलत नहिं हम इन समतूल ।।
लषन रास गौरीपति आए[81] रचि गोपी(तन)[82] बेस ।
बिहंसि स्यांम सुष पाइ प्रेम सों करि थापै गोपेस ।।
चतुरानन बेद मै वरन्यौ सुन्दर रास विलास ।
कहे देव रज क्यों न भए हम धोवत[83] या थल वास ।।146।।

रास थलो छबि देषि भली बिधि सुरत पुनी अकुलाइ ।
धन्य-धन्य ऐ ब्रज की भामिनि नहिं इन सम्मुह आइ ।।
रह्यौ चंद्रमा थांभि[84] हिरन रथ देषत छवि तजि सास ।
जान्यौ नहीं[85] भेद[86] सुष मै तिह निसारही षटमास ।।
हरषित भई सकल ब्रज गोपी पूजै वंछत(कांम)[87] ।
करि जमुना[88] स्नान मोद सूं पहुंची धामिन धांम ।।147।।

सो छबि दसम सकंद भागवत बरन्यौ बेदवयास ।
सुनि सुनि मो[89] सिरदारसिंह न्रप बरन्यौ सहित हुलास ।।

---

76 ग—आइ । 77. क ख—धरनी । 78. ग—केदार । 79. ग—मरसजि । 80. ग—विधि-विधि । 81. ख—अयि । 82. क ख ग—वन । 83. ग - धोवन । 84. ग—ठांभी । 85. ग—रही । 86. ख—द । 87. क ख ग—कांमै । 88. पत्रांक ३५ समाप्त । 89. ग—सो ।

सुनिहि स्रवन दै प्रेम-भक्ति सो जो[90] नर चित्त लगाइ ।
ताकौ भ्रम तम दुरित(दु:प)[91] सब तुरत दूरि ह्वै जाइ ।।
अरथ धरम अरु कांम मुक्ति फल पावै च्यारि प्रकार ।
जो सुनि करै कंठ गुन गावै ब्रज-भूपन सुपसार ।।148।।

अथ रागिनी बिलावल रूप कथन

कवित्त-ताल

सोरहि किये सिंगार वैठी(द्वार)[92] मम जोवै
बदि के संकेत इत आवै[93] कब धौं पीया ।
अरुन-वरन चीर तन है[93] वरन नील प्रीतम की,
सुरति को ध्यावत दिये हिया ।
कहै सिरदार स रि ग म पि सुरनि लीन्है[94],
औडो जाति धैवत भवन है........।
गाइये बसंत दिन पहिलै पहर येह,
रागिनी बिलावल हिंडोल राग[95] की तिया[95] ।।149।।

कवित्त ताल चौतालौ

नित नई सोंह करै हम सो लजो[96] है गीत[96],
बदि के संकेत हिये[97] हेत वाहि बाम लसौ ।
निसारिस देत इतै[98] निसारित देत उतै,
[99]निस रति[99] निसारित आवतउ ताल सौं ।
कहै सिरदार हार सषिया सिषायन दै,
छांडत न(पग)[100] मन बांध्यौ जो रसाल सौं ।
समुझि सयान लीजै जाहि ताहि जान दीजै,
कीजियै न मान माई मदन गोपाल सौं ।।150।।

---

90. ग—जा । 91. क ख ग—दुष्य । 92. क ख ग—दवार । 93-93. यह पाठ प्रति 'ग' में नहीं है । 94. ख—लीहै । 95-95. ख—कतिया । 96-96. ग—हेंगित । 97. ख—हि । 98. ख—गते । 99-99. ग—विसरति । 100 क—पन, ख—मन, ग—प म ।

धुरपद ताल

छबि वा बाल की नहीं भूलत सारी सरस ।
बिसारी नारी वाही दिस अनुकूलत ।।
जे जे बचन कहत वह भामिनी तेइ[1] आयक[2] बलत ।
वा मुख पंकज घ्राण लेत ए हित भये मधुप[3] नित झूलत ।।
वा मुष चंद चकोर किये द्रिग रहत रैन सुष फूलत ।
आवत हरि सिरदार हमारे प्रात विरह सर हूलत ।।151।।

कवित्त ताल

लटपटे (पेंच)[4] हैं धरत अटपटे पग,
बचन कहते सुष मुष तुतरात री ।
द्रुम सुता सुत[5] को लगाये लाल टीको,
भाल[6] द्रिगनि उनीदे सब रस-मसे गात री[7] ।
कहै सिरदार लाग्यौ[8] पीक पलकन अजौं,
भौंह निमलये सोहे हो तन लजात रो ।
कहुं री हे अधरात कहुं पीछे रात आलि,
बालम हमारे आये रजनी विहाल री ।।152।।

कवित्त ताल

सांची कहौ मेरी आन, रजनी बिहानी कहां,
देखत हो भावति चिहरवाजी[9] ब्याल कौ ।
षासा के झमा मैं षासी रेष झलकत क्यों,
ए प्रातः ही पधारे बिन पायन[10] ही ताल कौ ।
कहै सिरदार भाल बदन लगायो कहां,
बिघन (निकंद)[11] जानि[12] पूजै ईस वाल[13] कौ ।

---

1. ग—तेइ । 2. पत्रांक ३६ समाप्त । 3. ख—धुप । 4. क ख ग—पंच । 5. क ग—सुठ । 6. क ग—चाल । 7. ग—पात री । 8. ग—लग्यौ । 9. ग—बिहरवा । 10. ख—यायन । 11. क ख ग—निकेद । 12. ग—जारि । 13. क—नाल, ग—लाल :

रचना बचन सुनि रंचहु न रह्यौ मांन,
मानिनी बिहंसी मिली मदन गुपाल कौ ।।153।।

अथ रागिनी पटमंजरी रूप-कथन

कवित्त-ताल

संपूरन जाति पै ध नि स रि ग म है सुर,
बेरि बेरि उठतै[14] न बिरह घरी-घरी ।
संगन सहेली बैठी सैज पै अकेली बाल,
सुमन सुमाल कुम्हिलांनी उर पै परी ।
कहै सिरदार भूली आसन बसन बाल,
गाइये बसंत अधरात कांम सोभ री ।
पंचम भवन[15] तन छीन पर बीन अेह,
रागिनी हिंडोल की अमोल पट मंजरी ।।154।।

कवित्त-ताल

[16]क्यों लखिहौं अली किंसुक[17] फूल,
ओ लाल दुकूल[18] को रंग नसैहै[16] ।
कोकिल ब्यकुल ह्वै जब बोलिहै,
अंब को मोर बगोचनि छैहै ।
सीतल मंद सुगंध समीर है,
बीरस री रह पीर उचैहै ।
क्यौं लषि हौं सर मन के अनजु पै,
घर कंत बसंत न अैहै ।।155।।

---

14. क ख—उठ, ग—उठै । 15. पत्रांक ३७ समाप्त । 16-16. 'ग' प्रति में ये पंक्तियाँनहीं हैं । 17. क ख ग—किसुक । 18. क ख ग—दकुल ।

धुरपद तान

हरि आए मोहि मनावन री ।
मैं कपाट दै रही सदन के दीऐ([19]नगीच न)[19] आवन री ।।
ठाड़े रहै घरि ह्वै सजनी[20] कहत बैन मन भावन री[20] ।
हौं बोली न उठो पलिकां ते पहिचाने चित्त पावन री ।
उतरे कहि सिरदार महल तै तब लागै पिक गावन री ।
क्यौं बीतें अधरात सषी री[21] लाग्यौ बिरह सतावन री ।।157।।

धुरपद ताल

आजु अधरातक राधा जागी ।
मांगी पांन बीरी नहिं पांनी कान्हर कान्ह रट लागी ।।
कहां गये पिय हिये तज सजनी क्यों बहि उठि अनुरागी ।
लषि री अधर सधर छंद अजहुं यो बोली रस पागी ।।
दियो किवार वार षिरकी बाल निरषि चली आगो ।
कहै सिरदार कहां ह्वै आऐ रसिक स्यांम बड़-भागी ।।157।।

[ताल]

अनौषौ नेह[22] नैनन[23] कीन्हौ ।
मेरौ मन करिकै[24] मनमथ वस लै[24] मोहन तन दीन्हौ ।।
देष अधि[25]क दहत तन आली बिन देषै सुष हीनौ ।
घूंघट पट परबत सो लागत पलक पाट सम चीन्हौ ।।
मोर मुकुट काछै(कछनी)[26] कटि स्यांम मातरस भीनौ ।
(बिन)[27] देषे सिरदारसोह वहै बासर होत महोनौ ।।159।।

इतिश्री महाराजा सुलतानसिंहजी सुत,राजा सिरदारसिंह जी विरचिते सुरतरंगग्रंथे राग हिंडोल भारज्या संजुक्त बरनन नांम त्रतीयो तरंग ।।3।।

19-19. क ख—नगीचन, ग—नगीवन । 20-20. ग—कहै तबै मन भावन री । 21. क ख—सषी भी । 22. ग—नैह । 23. क ग—नैयन । 24-24. ग—मनमथ न चलै । 25. पत्रांक ३८ समाप्त । 26. क ख ग—कछैनी । 27. क ख ग—बीनां ।

अथ राग दीपक रूप कथन

कवित्त ताल

चढयो गजराज गज गामिनि संग लिये,
कीन्है सुष रंग अंग सुन्दर मयन तैं ।
सुमन अनारहुं ते अधिक अरुन देह,
नेह[28] भर्‌यौ तरुनी बिलोकित नयन तैं ।
कहै सिरदार गरै हार घर गजमोतिन कौ,
स रि ग म पि ध नि प्रकास तब येन तैं ।
गाइऐ षरिज भौन ग्रीषम जुगम जांम,
संपूरन दीपक भौ भान के नयनतैं ।।159 ।

ताल

बालम (बिदेस)[29] ते संदेस पंहुचाय आयौ,
सुनिक छबिली बाल ह्वै रही उदासही ।
काहू सों न बोल द्रिग षोल न धरनि डोलै,
बोल घनसार रंच भरत उसांसही ।
कहै सिरदार असो बिरह तपानी देह,
(सूषै)[30] कंज पांपुरी सषो जो सेज डाँसही ।
त्रिबिध समीर तन लागत समान काठी[31],
छाती[32] सो छबाई बाती दीपक प्रकासही ।.160।।

कवित्त ताल

स्यांम को संदेस सुनि स्यामा तन ताजि[33] भई,
छाती लेप करत मलय सषी चहकी ।

---

28. प्रति 'ग' में यह पद नहीं है । 29. क ख ग –बदेस । 30. क ख ग—सुषै । 31. ग—कान्ति । 32. ग –छान्ती । 33. पत्रांक ३६ समाप्त ।

अंगना के अंगनक छाई आंच[34] आंगन मैं,
आई न सकत आली फिरै दुरि बहकी ।
कहै सिरदार उठी सिलगी किवारी बार,
अगर के षंभ की षसबोई महकी ।
ग्रीषम दुपहरी(दावानल)[35] हरी ते,
गहरी अधिक आंच[36] अहिरी बिरह की ।।161।।

धुतपद ताल

बांची स्यांम पाती ।
जोग तुम कीजौ भली विधि भोग कुबज्याती ।।
गोपिका सुनि परी मुरछि बचन इह भांती ।
तपै तन बिरहागि सों भई हेम दुति राती ।।
अधिक प्रेम विच्यारी राधा भई तन ताती ।
तिहि आंच कहि सिरदार दीपक जगे जु बाती[37] ।।162।।

धुरपद ताल

बालम चलत सुनि परदेस[38] ।
गिरी मुरछि अवनि[39](कामिनी)[40] मनो[41] षाई ठेस ।।
तपत तन[42] मन विरह व्याकुल आस स्वासा लेस ।
पास की सषिया सषी मुष चंदन बिभेस ।।
कलिष द्रुम तन आये भूषन सकल विधि लिवा हेस(?) ।
सिरदार कहि दिये नैंन तीजो मोहि देव महेस ।।163 ।।

अथ राग दीपक की भारज्या रूपकथन

सोरठा

देसी जोनि[43] कमोद, नट केदारौ कान्हरो ।
पांचो दायक मोद, राज राग दीपक घरनि ।।164।।

---

34. ग—आव । क ख ग—दावनल । 36. ग—आव । 37. क ख—बानी ।
38. ख—पदेस । 39. ख—जावनि । 40. क ख ग—कांमिन । 41. ग—मानो ।
42. ख—नं । 43. ख ग—जान ।

अथ रागनी देसी रूप कथन

कवित्त तितालौ

तन गोरे बिराजत[44] दकुल हरे,
सकल सिंगार करे सुन्दरता घरनी ।
सैन किये पिय तहां मैं न बस ठाढ़ी,
बाम केलि कियौ चाहै बैन बा[45]ह चैन अरनी ।
कहै सिरदार स रि ग म पि ध परिज. भौन
तन अभिरांम जग(षाडौ)[46] जाति बरनी ।
ग्रीषम की रितु याकौ गावत जुगम जांम,
रागिनी सकाम देसी दीपक की घरनी ।।165।।

ताल तितालौ

[47]रेसम सौं गूंथी षासी षस की बंधाइ टाटी,
चंदन की चोब चारू षस के सम्याने मैं ।
षस का परदा परी है चित्रसारिन मैं,
षस की किवारो बारो छाइ केलियन मै ।
कहै सिरदार हार फूलन के लटकाये,
करि कै गुलाब जल तर तहषाने मै ।
ग्रीषम तपनता मै जल सुत[48] सेज पर,
पौढ़े लाल लाडली षुस्याल षस-षाने मै ।।166।।

धुरपद ताल

जय दुर्गा दुर्गति भंजनी आनंदिनी आनंद करनी ।
सहित सेन महिषेस मारनी धूम्रलोचन जारनी भय हरनी ।।
जय सिंह बाहनी दानव-दल-दाहनी जगभार-बाहनो रूप घरनी ।
जय गणपति अंबा सुर अवलंबा[49] हिमगिर तनया[49] सकर घरनी ।।
समर सहायक सेवक सिरदारसिंह को विजय करनी वेदन बरनी ।।167।।

---

44. ख—बीजत । 45. पत्रांक ४० समाप्त । 46. क ख ग—पांडो । 47-47. यह कवित्त 'ग' प्रति में नहीं है । 48. ख—कत । 49-49. ख—हिमर्णस्तनया ।

[50]कवित्त ताल

चंचलता निरषि तुरंगन नवायो सीस,
बन[51] बन भ्रमे म्रग ह्वै कै दलगीर से ।
देषो छबि मोननि निकेत जल जाय कीन्हौ,
जलज लजाने हैं फुलाने पाय पीर से ।
कहै सिरदार देषि चित में बिचारी हारी,
घायल परे हैं धीर वीर वलबीर से ।
इसक (फंदा)[52] मै (फंदि)[53] कैसे केरी भागे लागै,
नोकदार नैन तेरै फोकदार तीर से[54] ।।168।।

[55]रे अहीर बंकी भौंहन वाले काले वे बे पीर,
गली गली अंडाता डोलै बोल बैन गंभीर ।
मोहन रूप अनूपम तैंडा नैन बिसारै तीर,
लागे आनि अचानक रे तन मो मन धरत न धीर ।
लैवे दरद दुपट्टा पीरा पूँछि द्रिगों का नीर,
तो जर्‌यौ सिरदार मुहब्बत सांची सांच सरीर ।।169।।[55]

अथ रागिनी (कामोद)[56] रूपकथन

कवित्त ताल

ध नि स रि ग म पि संपूरन बरन पीत,[57]
मात करै नैन जलजात[58] अंन अनी कौं ।
(आंगी)[59] सेत सारी लाल धैत्रत सदन बाल,
लजत भुजंग अंग-अंग देषि बैनी कौं ।
कहै सिरदार मार पीर बेसुमार रंच,
कोकिल की बैन न सुहात म्रगनैनो कौं ।

50-50. यह कवित्त 'ग' प्रति में नहीं है । 51. ख—वदन । 52. क ख—फदा । 53. क ख—फदि । 54. पत्रांक ४१ समाप्त । 55-55. यह कवित्त 'ग' प्रति में नहीं है । 56. क ख ग—कमोद । 57. ख—रीत । 58. ग—जलजात । 59. क ख ग— आगी ।

गावत गुनी हैं रितु ग्रीषम दुपहरी मैं,
दीपक की घरनी कमोद मोदनी कौ ।।170।।

कवित्त ताल [60]तितालौ[60]

हीरा से रदन सदन छद प्रवाल असे,
सोने सम अंग कच मानो[61] नाम सूनरी ।
श्रीफल से कुच मालती लता से हाथ,
कंच से अरुन नष नषत ते दून री ।
कहै सिरदार सोहै भ्रकुटी कमान असी,
(नवै)[62] अगनैनो के मदन सर तूंण री ।
चंद सो बदन लीन्हे(सोरहो)[63] सिंगार कीन्हे,
उवत सी आवै[64] आप चूवत सी चून री ।।171।।

धुरपद ताल

तेरो मुष चंद सो नीको ।
असो नांही अवनी मण्डल में तिय काहू तिको हो जो देषि ।।
जा छबि सौं तिन को कमल वदन फीकौ ।
स्याम चित्त भावन दिन रजनी सहित स्याम टी[65]कौ,
मोद दैन नासन बिरहा तम द्रिग चकोर ही कौ ।
कहै सिरदार प्रभा जग छावन भावन हरि पी कौ ।।172।।

धुरपद ताल

गोद भरी हरि गोरी री ।
षेलत सषि अैन मै बदन जोत पीरी तन सी ह्वै गई थोरी-थोरी री ।।
(अंसुआं)[66] द्रगये आंषिन मैं रहो चक्रित[67] ह्वै भौरी री ।
पंच लटारि करन गहि अंचल भरी अंक बरजोरी री ।।

60-60. 'ग' प्रति में यह पाठ नहीं है। 61. क ग—मो नो। 62. क ख ग—नबै।
63. क ख—सोरोहो, ग—सोरोही। 64. ग—अवि। 65. पत्रांक ४२ समाप्त।
66. क ख ग—आंसुआ। 67. ग—चकित।

प्रमुदित भई देषि सु सगरो मति अगरी दोउ वोरी री।
बोली कहि सिरदार प्यार लषि चिरंजी रैजो येह जीरो री ।।173।।

धुरपद ताल

करत सषी सिंगार राधा।
मंजन कियो दियो पग जावक नैनन अंजन भरि नष[68] आधा[69] ।।
पहिरै चीर आभूषन सगरे देषत दरपन रूप अगाधा।
अगमद कलित कपूर बीरी कर लेत देत मुष भरि साधा[70] ।।
बैठी देवदारु सिंहासन सौतिन को मन लषि छबि दाधा[71] ।
भौंटन कहि सिरदार मनोहर मेटन को विरहा अरि बाधा ।।174।।

अथ रागनी नट रूप कथन

कवित्त ताल

कुंदन सो अंग सोहै बसन सुरंग लाल,
नट बासी बनी बाल सब गुन[72] आगरी।
नेह बस करि हरि लीन्हौ मन प्रीतम कौ,
प्रमुदित सोहै[73] प्रभु[74] दान में उजागरी।
कहै सिरदार हये पीठो पर धरै(करौ)[75]
म नि ध प ग म रि षरिज ग्रेह सागरो ।
ग्रीषम दिवस जांम चौथे गाइयतु गुनी,
रागिनी[76] सुनट राग दोपक की नागरी ।।175।।

कवित्त चौतालौ

आनंद को चंद आछौ(ऊगो)[77] दुतिया कौ,
चंद कीजिये दरस यों जनायो काहु नंद कौ।

---

68. ग—ऊष। 69. ग -आधी। 70. क ग—साधी। 71. ग -दीधा।
72. क ग --पुन। 73. क ख—सोह। 74. क ग—प्रभु। 75. क ख ग—कर।
76. यह पाठ 'ग' प्रति में नहीं है। 77. क ख ग—उगो।

उठै ह[78]रषाइ चढ़े चांदनी महल धाइ,
बसन बताई सीस मांगत अनंद कौं ।
कहै सिरदार अटा-चढ़िकै कवरि राधे,
ग्रैसो मचलायो[79] हरि वोर[80] प्रेम फंद कौं ।
चंद[81] ही न देषै लाल देष बाल मुष चंद,
बालहूं बिलोकै ब्रज चंद मुष चंद कौं ।।176।।

धुरपद ताल

बेदरदी वह गवाल री दरदी मन मेरो ।
मैं व्याकुल वाके बिन देषै वह ग्रावत न उताल री ।।
पांनि पवन मोहि नहिं भावत तावत कांम कराल री ।
बूड़ि बूड़ि मेरो जीय ऊब्रत[82] वा छबि[82] सुन्दर तालरी ।।
नैनों नींद न ग्रावत क्यौं ही षरकत उर गोपाल री ।
जो सिरदार मिलावै स्यांमहि[83] तौ तुंहि करिहौं निहाल री ।।177।।

ताल

मानत क्यों नहि री तूं बात ।
रसना थकी बचन रचना करि पग मग ग्रावत जात ।।
तुव मुष चद लषे बिन उनके द्रिग चकोर ललचात ।
बंठ कमल सेज पर बंधे जलजात ।।
छिऐ तन फूल पियत नांहि जल बीरोहु नहिं षात ।
कहि सिरदार दया नहिं तो मैं ताहू पर ग्रनषात ।।178।।

ताल

माई मेरे नेंना वा हरि सौं ग्रटके री ।
बार-बार बाही दिस ध्यावत रहत नहीं हटके री ।

78. पत्रांक ४३ समाप्त । 79. ग—न चलायो । 80. ग—त्रोरे । 81. ख—नंद ।
82-82. ग—वा लबि । 83. ग—स्याम महि ।

जग[84] उपहास त्रास के आलीगन तन-तन षटके री ।
भरि-भरि प्रेम पिये लेत्रा (सब)[85] रूप लेत गटके री ।।
लोकलाज कुल कांनि बड़ाई बसन दूरि पटके री ।
ह्वै सिरदार (सषा से षासे वा)[86] नागर नटकेरी ।।179।।

अथ रागिनी केदार रूपकथन

कवित्त

ग्रीषम (में,[87] अधरात गाईयतु ओड़ौ,
जाति भवन निषाद नि स ग म पि पेषियै ।
जटा जूट सीस सुर (सरिता)[88] स्रवत जात,
(अवदात)[89] चंद षंड भाल में बसे[90]षिये ।
कहै सिरदार अंग उरग जनेऊ धरे,
जोग ध्यान धरे [91]जोग जोग[91] तिसु लेषिये ।
तापसी सरूप वैठी निपट अनूप येह,
रागनी केदार दार दीपक की देषिये ।।180।।

ताल

प्रीतम पर वीन धरि सायत नवीन आय,
जो पर परदेस प्रात चलिबो विचारियै ।
जानत हो प्यारी हमें लाल तो हमारी येह,
सुनिके अरज करी गरज पधारिये ।
कहै सिरदार तुम्हें पारथ समान धन,
धारी है कहत गुनी सो पद सुधारियै ।
यह चंद चोर मेरे मुष की करत होऊ,
आज याके रथ के हरिन दोऊ मारियै ।।181।।

---

84. ख—जाग । 85. क ख ग—सव । 86. क ख—सषा सेष, ग—सष सिषा । 87. 'ग' प्रति में यह पाठ नहीं है । 88. क ख ग—सीरता । 89. क ख ग—अवदा । 90. पत्रांक ४४ समाप्त । 91-91. क ख—जोग ।

धुरपद ताल

आजु तुम चंद मो मुष चंद देषो काम छवि अधिकाई ।
मंद-मंद हांकत रथ नाई अपा(य) में कौन बड़ाई ।।

तुमरे अग हमरे अग से द्रिग देषो आजु अड़ाई ।
जीतं कौन कान्ह कहि दैहे कीन्है रूप लड़ाई ।।

तुम मैं कमल नहीं मो आनन हे देषो सुपदाई ।
कहि सिरदार सुधारस जाको पिय तन पिय(अघाई)[92] ।।

ताल

आजु को चांदनी सषि नीकी ।
दाही सी कि सोति अंग अंगन लषि गलबांहो पी की ।।

मो सुष सेज निरषि पिय प्यारी भई किती मुष[93] फीकी ।
लागी कहन परसपर बाते(या ,[94] सौं लालन जो की ।।

यो पुनि कहत कामिनी (केती येह तन तीय बड़ी रति की)[95]
कहि सिरदार कान्हहि लिय)[96] सो प्रीति प्रकासत जी को ।।183।।

ताल[97]

हर को तिलक मांई कैधे हरहार है,
कैधे नभ तारायन राजै हिये नारायन ।

केधो धूम उगिन्नत जहर अंगार है,
फैलो दिस बिदसा उज्यारी के पसारी ज्वा[98]ल ।

सह न सकत तन बिरह अपार है,
उपजै न अहलाद निपजै कहा वैयं है ।

भौन में रयो न परै चांदनी सों तन जरै,
रुचत न षान-पान पानो घनसार है ।

गारडु मोलै जा सिरदार सोह प्रभु प्यारे,
याकै विष हरिबे को ऐहो उपचार है ।।184।।

---

92. क ख ग —अघाई । 93. क ख -सुष । 94. 'ग' प्रति में 'या' अनुपलब्ध ।
95. क ख ग—'केती ये हातय बड़ी रती की' । 96. क ग —लिया, ग —लिये ।
97-97. यह कवित 'ग' प्रति में नहीं है । 98. पत्रांक ४५ समाप्त ।

अथ रागिनी कान्हरा रूप-कथन

कवित्त ताल

सपूरन जाति स रि ग म पि ध नि है,
सुर भवन निषाद हिये धार हेत अति है।
धरै किरवाल कर दछिन दुरद दंत,
बांम कर बसन सुपेद जौग जोगति है।
कहै सिरदार अंग चंदन चढ़ाय संग,
तरुनी बढ़ाय[99] मोद बीर महामति है।
ग्रीषम की रैन चैन प्रहर प्रथम गाये,
दीपक की नारी भारी कान्हरा दिपत है ।।185।।

ताल चौतालौ

कारे-कारे रेसम की डोरनि सों आभूषन,
मुहिकारो चौवाल[100] चढ़ायो सब गात है।
ओढि कारी सारी तेसी कारी अंधियारी निस,
भयानक भारी ताहू नै कौन संकात है।
कहै सिरदार सोहै अमरि[1] को उर हार,
अमर[2] अचिर[3] भीर भीरम डरात[4] है।
नुपुरन मुद्रि छुद्र घंटिका बजें[5] न मानौ,
मदन महीप गज घंटा बिन जात है ।।186।।

धुरपद ताल

बाल तन जोबन आयो लाल।
दीपत देह नेह जत अैसे जैसे रैनि मसाल ।।

---

99. ग—बढाय। 100. ग—चोवा। 1. क ख—अमर। 2. ख—अनर।
3. क ख—अचरी। 4. ग—मरात। 5. ख—बमैं।

चंचलता गई बिसरी छबीली लीन्ही गुर गति हाल ।
पून्यौ सरद चंद्रमा के सम झलकन लाग्यौ भाल ।।

लंक छीन भये पीन पयोधर अधर बिंब सम लाल ।
कहि सिरदार रमत निस यासों ह्वै हौं स्याम निहाल ।।187।।

ताल

[6]गई मिटकाई[7] त्यों लदकाई ।
चंचलता निक करी चरनन तै आनि बसि थिरताई ।।

सीसी बीचि दीसे जल जैसे यो तन मंथराई ।
रंग ताफता बसन साफता यो तरुनी दरसाई ।।

चलत रुलाबत बांह दुरद गति अचला उड़ि उड़ि जाई ।
कहि सिरदार झकोरत पल-पल जोबन पोंन सुहाई ।।188।।

तूं करि बैठी मांन मांनि[8] तूंही कान्ह बुलावै ।
तोरि तोरि किसलय लै कुंजन सेज बिछावैं ।।

ले ले तेरो नाम रंगीली मुरली सबद सुनावै ।
सुनि कलहंस जांनि नूपुर रव बाहिर देखन आवें ।।

ज्यौं ज्यौं अतन सताबत या तन त्यौं त्यौं तन[9] ध्यावै ।
कहि सिरदार वाही छिन[10] नीकी जब तौ दरसन पावै[11] ।।189।।

इति श्री माहाराज सुलतानसिंह जी सुत राजा सिरदारसिंह जी बिरचिते सुरतरंग ग्रंथे राग-दीपक भार्या संयुक्त वर्णन-नाम-चतुर्थ तरंग ।।4।।श्री।।

अथश्रीराग रूप कथन

कवित्त ताल

षरिज सदन तन सुन्दर मदन हूं तें,
[12]सुधा तें सरस बैन भाषत सभाग है ।

6-6. प्रति 'ग' में यह पद नहीं है । 7. पत्रांक ४६ समाप्त । 8. ग—मारि । 9. ग—तर । 10. ग—छिव । 11. ग—आवै । 12. ग—'सुधा ते सरस भाग है' ।

(प्रफुल्लित)[13] कमल में अमल फटिक माल,
[14]...हीये (अ[15]नुगहै) ।
कहै सिरदार अंग बसन(सुपद)[16] धारी,
स री ग म पी ध नि संपूरन सपाग है ।
हेम दिन चौथे जांम[17] गावै अभिरांम,
धरा[18] सेंस तें प्रगट यहै बैस सिर राग है ।।190।।

कवित्त ताल तितालौ

रेसम की डोरिन सों तास को बितान तान्यौ,
मोतिन की [19]माल री[19] झुलत[20] सोभ न्यारी है ।
गीलम बिछारी बांधी परजादा जरी सुहाई,
मीनामय चित्रित चीनी की चित्र सारी[21] ।
कहै सिरदार ताहा रतन प्रजंक पर,
सोरहे सिंगार साजै सारी जरतारी है ।
कीन्है सुष ठाठ षोल चंदन कपाट बैठी,
बिलोकित बाटै प्यारी राधिका तिहारी है ।।191।।

धुरपद ताल

मेरे द्रिग मोटे के मोहन के आज कौं[22] है ।
आई जांनि स्यांम सुन्दर हौं आई (आपने)[23] काम ।।
वे पेष रे पहो[24] (हौं)[25] ठाढ़ो सषी झगरत विन काज ।
देषो जो सोर तजि अबहीं पाल्है[26] कहा लाज ।।

---

13. क ग—प्रफूलित, ख—प्रफूलि । 14. इस पद का प्रारंभिक भाग तीनों प्रतियों में उपलब्ध नहीं है । 15. क ख ग—अनुराहै । 16. ग—सुपेद । 17 ग—जामैं । 18. ग—धर । 19-19. ग—झालरा । 20. ग—डुलत । 21. पत्रांक ४७ समाप्त । 22 क ग—को । 23. क—नापने, ख—मापने । 24. क—यहो, ख—जहो । 25. क ख ग—हों । 26. क ख—याम्है ।

न नैनन सौं मिलत है नहिं उपजो नेह दराज ।
कहि सिरदार निरषि राम सोभा हरषी सषी समाज ।।192।।

ताल

[27] बैन बजाई गुपाल चली बन तैं ब्रज गाई ।
हर आगम जिय जांनि तिया अति ही अकुलाई ।।
एकें वालह मेलि बांधि कटि के तट धाई ।
ऐकनि कंटि किंकनी भूलि उर सों उर माई ।।
ऐकन अंजन भूलि द्रिगन मैं जावक दीन्हौ ।
एकन अगमद तिलक कपोलन ही धरि कीन्ही ।।
लीन्हो मन येह नेम बिलोकै कुंज बिहारी ।
छीवै कहि सिरदार तबै सुमनेस कर बारी ।।193।।[27]

ताल

आजु पिया धाम हमारै आवै ।
ऐक जावक देत पगन मैं ऐकै सेज बिछावै ।।
ऐकै करि मंजन द्रिग कंजन[28] अंजन भरि नषरावै[29] ।
ऐकै(मुकुर)[30] बिलोकित वदन छबि बैठी ध्यान लगावै ।।
ऐकै बांटि बीरी सषियन संग आनंद मंगल गावै ।
बहु नाइक[31] सिरदार स्याम ज्युं सब्र हो के मन भावै ।।194।।

अथश्री राग की भारज्या रूप-कथन

दूहौ

मालसरी गनि[32] मारवौ(पौर)[33] बसंत बषांनि ।
धनासरी आसावरी, सिरी राग[34] तिय मांनि[34] ।।195।।

27-27. 'ग' प्रति में यह पद उपलब्ध नहीं है । 28. ग—अंजन । 29. क ख—नष नावै । 30. क ख ग—मुकन । 31. ख—नीद्रक, ग—नायक । 32. ख—गानै, ग—गन । 33. क ख ग—ग्रोर । 34-34. ग—त्रिय मान ।

अथ मालसरी रूप कथन

कवित्त ताल

बैठी कांम बांम सम सुन्दर साल तरै,
पहिरै अरुन चीर आंगि पीत पगिनी ।
सषी कर ताकै पर[35] निज कर(राषै)[36] बाल,
चलत म[37]राल चाल हाल अनुरागिनी ।
कहै सिरदार तन कोमल कमल सम,
संपूरन स रि ग म पि ध नि सभागिनी ।
षरिज भवन हेम रितु दूजै जांम गावै,
राग[38]सिरी नाम ताकी मालसरी रागनी ।।196।।

कवित्त ताल चौतालौ

बनक सो बनै[39] ठनै षरे हरि बारनै[40] मैं,
आई चली वह सामी गली करिगो नहीं ।
बिहंसि बुलाई लीन्ही आप वासो सोह कीन्ही,
वाने गाढ़ो दीन्ही हसि अंचल सों मौन ही ।
कहै सिरदार कह्यौ वासौं सोई कीजै जाय,
यों ही मोपै आई क्यौं(असाचै)[41] होन दो न हीं ।
सुन लजात मेरी बात क्यौं गुपाल लाल,
आप सों कहत बात बाल वह क्यों नहीं ।। 197।।

धुरपद ताल

हरि छबि निरषि रीझी बाल मोर मुकुट बिसाल ।
केसर तिलक उदित भाल श्रवन कुण्डल ।।

---

35. ख परि। 36. क ख ग—राष। 37. पत्रांक ४८ समाप्त। 38. ग—रजि। 39. ख—वैने। 40. ग—वारन। 41. क ग—असा चै, ख—असाचौ।

मकर मकर आकृत कंठ मनि वनमाल ।
लाल कछनी पीत पट कर कंज लकुटी लाल ।।
नैन षंजन मीन गंजन मनो अली अनाल ।
सिरदार लषि इह रूप मोहन को न मोहै हाल ।।198।।

धुरपद ताल

माई आइ है कब स्यांम सुन्दर देषि घरि तू सोन ।
अकुलात निस(दिन)[42] प्रान मेरे तूं रही गहि मौन ।।
निस नींद द्यौस न भूख लागत भइ गत कौन ।
राष सी लागै बीरी मुष सी भाष सम भौंन ।।
कुसुम सैंन रुचै न पिय बिन पांन पांनी पौन ।
सिरदार हार महेस स्त्रक भए मो तन तौन ।।199।।

[43]धुरपद ताल

कीन्ही मोहन वा माई मोसों बरजौरी री ।
अंचल छोर हाथ गहि चंचल दधि की मटकी फोरी री ।।
हंसि ग्वालि हहराइ संग की त्वें भई थोरी-थोरी री[44] ।
पहुंच पकरि पहुंचि गहि हरवा मोतिन की लर तोरी री ।।
बरज्यो न[45] मांन्यौ नहि कैहुं गारी जिम होरी री ।
हंसि सिरदार लगाइ करज कुच जात भयो कित दोरी री ।।200।।

अथ मारू रूप कथन

कवित्त ताल

जोबन के मदमाती अति गरबीली,
बाल सहेर सदन बैठी छबीली सुहाग की ।
सघन सुगंध बारे फूलन की माल गरे,
जरतारी सारी वोढ़ै नारी बड़ भाग की ।

---

42. क ख ग—दीन । 43-43. प्रति 'ग' में यह पद नहीं है । 44. पत्रांक ४६ समाप्त । 45. क ग—मे ।

कहै सिरदार जाको निरषि अनूप रूप,
चाहै मुष चूम्यौ सषी छकी अनुराग की ।
स रि ग म ध सुर षरिज धाम ओड़ो,
मारू हेम(दिन)[46] गावै चौथे जाम सिरी राग की ।।201।।

ताल चौतालौ

लीन्हैं (मैं)[47] जमुना जल जमुना तैं आवत ही,
मिलै नंदनंद न जिन्हैं जानत जगत है ।
मोर का मुकुट धरैं चदन को षोरि करैं,
गुंजमाल गरै[48] रूप मारहि ठगतु[49] है ।
कहै सिरदार छबि देषिहौं सुमार भई,
छकि[50] सी गई[51] हौं[52] चितबत हि ठगतु है[52] ।
कैसे के मिलौंरी[53] बिन मिलै न रहाई परै[54],
नैंनन[55] मैं नेह उर हीयरे लगतु है ।।202।।

धुरपद ताल

माई आजु लालन आवै री ।
फरकत कुच भुज अंक भरन हित सुमन सुहावै री[56] ।।
बैठत काग आगमन[57] बूझत उड़ उड़ जावै री ।
आछै लगत आभूषन दासी जे उजरावै री ।।
तरकत तनी वाम द्रिग फरकत चैन बतावै री ।
बिना कहै सिरदार बार तिये मंगल गावै री ।।203।।

ताल

अचानक [58]मो तन[58] माई कौन ब्याधि ह्वै आई ।
चंचल पग न चलत नितहि मग अब न भरी डग जाई ।।

---

46. क ख ग—दीन । 47. क ख ग—में । 48. ग—गलै । 49. ग—तमतु ।
50. ख—छाकै । 51. ग—मई । 52-52. ग — चितवताहि उयतु है' । 53 ग—मेलोरी । 54. ग—परि । 55. ग—नैन । 56. ग—सुहाव री । 57. ख—मन । 58-58. ग—मोतिन ।

छीन लंक लषि हो जीय संकत अरु नित अगरधाई।
नैना अैन देत नष[59] अंजन कानन आनि[60] लगाई ।।
राति कली हुलसी जिय छाती पल-पल सो सरसाई।
कहैं सिरदार डरै मति[61] तो पिय के कर पास बुझाई ।।204।।

ख्याल ताल

पीरे[62] पटवारो कारो माई(चित्त)[63] को चोर[64] री।
गैयन[65] पाछै कछनी काछै आछै निरख्यो भोर री ।।
सोभा सनी सो सनी पगियात ऊपर पर[66] मोर री।
[67]मकराकृत कुंडल[67] यों झलकत वारो भान करोर री ।।
[68] जा मग[68] गयो चरावन गैयन निरषत हौं तिह वोर री।
ताहू पै सिरदार दैत मन पल पल में न मरोर री ।।205।।

अथ धनासरी रूप कथन

कवित्त-ताल

वरिज सदन स प ध नि ग म सुर सोहे[69],
षाड़ो जाति रहत सहेली सोच सों घिरो[70]।
बैठी बोल सिरी वरै बिरह सों तर भई,
छकी सी गई तिय द्रिग आंसू धारै है निरी।
कहै सिरदार तन दुबरी उसास भरी,
उबरी उलास बास आंगी लाल नीझरी[71]।
हेम(दिनै)[72]दूजे जाम गावै सिरी दायक[73] के,
बिरहं बियोग भरी रागिनी धनासिरी ।।206।।

---

59. ग—नव। 60. ग—आडि। 61. पत्रांक ५० समाप्त। 62. ग—पीरो। 63. क ख ब—चीत। 64. ख—दोर। 65. गये न। 66. प्रति 'ग' में यह पाठ अनुपलब्ध है। 67-67. प्रति 'ग' में यह पाठ अनुपलब्ध है। 68-68. ग—जाम। 69. ख—तोहै। 70. ख—धिरी 71. क ग—मीझरी। 72. क ख—दीनै, ग—दिन। 73. ग—रायेक।

धुरपद ताल

[74] पकरि धाई गुपाल री ब्रज बालन माई ।
आजि नैन मुष मंडि के माला उतराई ।।

ऐकन लीन्हो[75] पीत पट फगुवा हित जाई ।
ऐकन कर ते छीन ले बांसुरी बजाई ।।

ऐकन भुज भरि भेंटि के मुष गारी सुनाई ।
ऐकन मुठि गुलाल मुकट ऊपरी गहि नांई ।।

त्रिपत भई तिह आप हरी ही अधरा रस पाई ।
राधा कहि सिरदार[76](सुध)[77] भरि हरषित आई ।।207[74]।।

ताल

षेलत फाग गुलाल सषी चलि देषन जैऐ,
लीजै[78] बैन[78] छुड़ाई [79]वीन कर बेस[79] बजैईऐ ।

भरि-भरि मूंठि गुलाल लाल मुष ऊपरि नईऐ,
गहि गहि करि बनमाल भलै रस ष्याल षिलैऐ[80] ।

लै-लै नंद कौ(नांम)[81] अनंदित गारी गैऐ,
केसरी रंग पतंग स्याम सब अंग भिजेऐ ।

दै सषिन कर बाल ग्वाल नहिं आपन दैऐ,
[82]दै हरि के द्रिग अंजन रंजन रूप सकैऐ ।

हरित कुंज द्रुम वेलि बाल बहु रंग बनैऐ,
[83]लै सिरदार बहार हार घर को फिर अैऐ ।।208।।[82]

---

75. ख—लीन्हे। 76. पत्रांक ५१ समाप्त। 77. क ख ग—सध। 78-78. ग—वैन। 79-79. संदर्भ में अस्पष्ट है। 80-80. ग—षिलै। 81. क ख ग—वाम। 82-82. ये पंक्तियां 'क' प्रति में नहीं हैं। 83-83. ग—'लै सिरदार बहार हार हार घर को फिर आए' यहाँ इसको छंद सख्या २०८ लिपित है।

अथ बसंत रूप कथन

कवित्त ताल तितालौ

स्यामल सरीर धरे गुंज रति भोर भीर,
लहै सुष सीर चित डोलत न अंत है ।
प्रेम छकी जोबन के मद भरी षरी बाल,
कर मैं रसाल और लीन्है काम तंत है ।
कहै सिरदार षिलवार सषि पछि[84] चाहै,
संपूरन स रि ग म पि ध नि लसंत है ।
षरिज सदन गावै पूरन बसंत दिन,
रागिनी बसंत आको राग सरीकंत है ।।210।।

कवित्त ताल

अमल दलहुं तै जे[85] बिमल अंग,
अरुन असेत सेत रंग छबि ताल की ।
धाई न सकत आई सकत न जाई कहूँ,
त्रिलषत आत[86] ही फंदानी प्रेम जाल को ।
कहै सिरदार[87] बार[88] धारन को तन[89] तीन,
सजती अनंष अधिकाई देषी लाल की ।
सपरी सिंगार रस अफरी है मान मद,
बिफरी सी भई [90]सफरी सी[90] आंषे बाल[91] की ।।211।।

धुरपद ताल

[92]को हो पिय रंग महल क्यौं आऊँ ।
मेरे अंग मेरे ही बैरी याते अधिक सकाऊँ ।।
देषि देषि मुष चंद जुन्हाई मुदित होत क[93]मल जुत जाऊँ ।
अंग सुबास रासि लहि मधुकर आनि गुंजरति ह्वै मंडराऊँ ।।
कहि सिरदार बिठारत सुक गन अधर त्रास अतिहि अकुलाऊँ ।।212।।[92]

---

84. ग—पलि । 85. ख ग—जो । 86. ग—अति । 87. ग—सिरवार ।
88. 'ग' प्रति में यह पाठ नहीं है । 89. ग—तव । 90-90. ग—सफरा-सी ।
91. ग—लाल । 92-92. प्रति 'ग' में यह पद नहीं है । 93. पत्रांक ५२ समाप्त ।

ताल

[94]देषत स्याम जबै तुव आंनन ।
तबै सुष लहत कहत छिन नीको ताते तू करि मांनन ।।
बिना सुनै तुव बोलत सुधा से धुन सो लागत कांनन ।
घुमत रहत दहत तन मानो तन बेधे मनमथ बांनन ।
तात हठ तजि चालि हठीली क्यों मारत अब तानन ।
बिना मिलै सिरदार स्यांम तुही छिवत न फूल न पानन ।।213।।[94]

ताल

माई ! भ्रमर कहाँ तें आऐ ।
गूंजत फिरत कुंज पुंजन मतु मदन महीप पठाऐ ।।
जानि बदेस स्यांम घन केसु सुनिहि[95] निसा न[95] दरसाऐ ।
त्रिविध समीरन ही सुनि सजनी मनसिज तोर चलाऐ ।।
बोलत हैं मधुर सुरै कोकिल मोहि लागत रसताऐ ।
कहि सिरदार न आवत मोहन किह तरुनी भरमाऐ ।।214।।

अथ रागिनी आसावरी रूप कथन

कवित्त ताल

सजल अचल व्रछ सीतल बिराजी तहां,
तन परचंड बाल हाल मन मोहई ।
सांवरे बरन आप उजल बरन चोर,
चंदन की पौर नाट लपटें न छोहई ।
कहै सिरदार ध नि स म पि प्रकासे[96] सुर,
ओड़ो[97] जाति धैवत सदन मोद मोहई ।

94-94. प्रति 'ग' में यह पद नहीं है । 95-95. ग—तिसान । 96. क ख—प्रकसि । 97. ग—आडो ।

हेम रितु दिन गाईयतु दूजे जांम,
रागसिरी अभिरांग बांम आसावरी सोहई ।।215।।

ताल चौतालौ

(सारी)[98] है सताई रंग रुचिर अरुनताई,
स्यांमताई भाल पंष बरुनो प्रमांन है ।
पलके सुफल ह्वै के गडनी कटाछ सौं,
[99](केधौं के)[99] तानि भ्रकुटी कमान लगि कांन है ।
कहै सिरदार जाके लागे ते न फेरि मांगे,
हरि अनुरागे येह अचिरज मांन है ।
नमे अग नैनन के अग से सुमार होत,
मोहन के नैंन मानो मनसिज बांन है ।।216।।

धुरपद ताल

गहै हरि लाड़ली की बांहै ।
डोलत फिरत (महाम)[100] प्रफुल्लित (कुंजन मांहै)[1] ।।
तोरि कुसुम किसलय रचि स्यांम घन कदम की छांह ।
पौढ़त तहां करत परिरंभन चुंबन नारी नाह ।।
परषत[2] पान पौंन बस जबही चमकि परत तन ताहै ।
करि सिरदार फंदे रस दंपति बिहरत[3] प्रेम अथाह ।।217।।

ताल

चलि ऐ कुंज भवन सुषकारी ।
आई वहां केलि हित राधा नहीं संग कोउ नारी ।।

---

98. क ख ग—साटी । 99-99. क ख—नोकेधो, ग—माखे । 100. क ख ग—महान । 1. क ख ग—कुंजना माहै । 2. क—अरषत । 3. ग—बिहरति ।

सारू सरस कसब को लहँगा मोतिन जटित किनारी ।
निरषि सोभ मुष चंद कुंज के रहत चकोर निहारी ।।
दीपत[4] [5]कुंज कुटी[5] झिझियातो यो छबि चहुं दिस भारी ।
कहै सिरदार गोद गही गोरी लेहु दौरि गिरधारी ।।218।।

धुरपद ताल

चली तूं गोवरधन गिरवर तर गिरधर गाइ चरावै री ।
आप ही आन (सिषा सषा से)[6] आन न पावत री ।।
लै लै तेरो नांम छबीली बैन बजावै री ।
वे ही बरन बीचार भली विधि गीत न गावत री ।।
मो कों दैन कहत उर माल तोही बुलावत री ।
ज्यौं सिरदार चकोर चंद हित त्यौं अकुलावत री ।।219।।

इति श्री महाराज सुलतानसिंह जी सुत राजा सिरदारसिंह जी विरचिते सुरतरंग ग्रंथे[7] राग श्रीभार्य्या संजुक्त वर्णनं नांम पंचमो तरंग ।।5।।

अथ मेघराग रूप कथन

कवित्त ताल

(घैवत)[8] भवन ध नि स रि ग सुर धारी,
ओड़ो जाति बरषा मैं गावत प्रवीन है ।
निस चौथे जांम अभिरांम नभ सीस,
कढ्यो वीर रस मैं सुभट थट लीने है ।
कहै सिरदार कर[9] धरे तरवारी आज,
गाजत समाज सों मुकट सीस दीने है ।
पीत अंग स्यामल मुषारबिंद सोभावंत,
यमह मेघ राग (महावीर)[10] रूप कीने है ।।220।।

---

4. ख —दीपत । 5-5. ख—कुंज के रहत, ग—कुंज फिरत । 6. क ख—सेष सि, ग—सिषा से । 7. पत्रांक ५४ समाप्त । 8. क ख ग—धेवत । 9. ग—करे । 10. क ख ग—महावीर ।

कवित्त ताल

बोलै ज्यों ज्यों मोर ज्यों ज्यों दादुर करत सोर,
त्यों त्यों अंग मेहि[11] मिल्यो कांम की कहल में ।
बुंदिया झमकै[12] त्यों त्यों उर सो लबंके धाइ,
दामिनी दमंकै त्यों चमकत गहल में ।
कहै सिरदार ज्यों ज्यों पवन झकोरा[13] लेत,
त्यों त्यों करि हेत लेत चुंबन ग्रहल में ।
सावन की रैन मन भावन को लीने संग,
सुंदरी प्रकासे[14] रंग सुन्दर महल में ।।221।।

कवित्त ताल

अवनि(हुलास भरी)[15] आठौं दिस दीसे हरी,
हरी हरी द्रुमनि सों लता लपटानो री ।
बोलन[16](लगै)[17] री मोर दादुर करत सोर,
पवन झकोर बरषन लाग्यो पानी री ।
कहै सिरदार मार महीपति चढ़ो धायो,
देषि बुग पंति है न धुजा फहरानो री ।
प्रीतम बिदेस तातैं सुधि बिसरानी जानी,
छतिया थरहरांनी घटा गहरानो री ।।222।।

धुरपद ताल

लषौ[18] पिय गगन घुमंडि[19] घन आऐ ।
मानहुं मदन महीपति जु के फिरत पटाभर धाऐ ।।
सुनि सुनि गरज त[20]रजि बिरही गन बन-बन सोर मचाऐ ।
पी-पी करत पपीहा दादुर जल थलहु अकुलाऐ ।।

---

11. क ग—मेरि । 12. ग—डमकै । 13. क ख—झकोर । 14. क ख—प्रकास सै । 15. क ख ग—हुलाभ री । 16. ग–वोलत । 17. क ख ग—बोले । 18. ख—लष्यौ । 19. क ख—घुमंडि । 20. पत्रांक ५५ समाप्त ।

चमकत नहीं चंचला प्रीत मंजरी झुलत न छाऐ ।
कहि सिरदार नहीं बुग[21] मानो दंत पंत दरसाऐ ।।223।।

कवित्त ताल

है न बग पंत यहै दरसत दंत पंत,
दादुरन बोल जोर[22] घंटन[23] के[24] छाए री[24] ।
चंचला न चमकै [25]न जरी की[25] झूलै कोर,
दार मोर ऐन सोर सांट मार न[26] नचाऐ री[26] ;
कहै सिरदार जो तु कहै[27] गरजत घटा,
गरजवै ही (घटामद)[28] झर-झर लाऐ री ।
बिरही बदन पर मदन महीपति के,
कारे घोरे धुमारे धुमारे गज धाऐ री ।।224।।

अथ मेघ राग की भारज्या रूप कथन

दूहा

टंक मलाररु गूजरी, भोपाली सुन[29] जांन ।[30]
देसकार ऐ पांचऊ, मेघ राग तिय[31] मांन ।।225।।

अथ राग टंक रूप-कथन

कवित्त ताल

दहकि दहकि उठै बिरह कृसान उर,
प्रानपति बिछुरे की हिये सुधि आऐ तैं ।
मंजु बिछाई सेज अंबोरूह दलन की,
कल न लहत न कांम तपताऐ तैं ।

---

21. क –दुग । 22. ग—सोर । 23. ग—घटा । 24-24. ख—छारि री । 25-25. ग —बदरी का । 26-26. ग—में चाऐ री । 27. ग—हैक 28. क ख ग —पदामद । 29. ग—छन । 30. ख—जीन । 31. ग—त्रिय ।

कहै सिरदार पास आवै ताहि मांन दैत,
जान देत नांहो पास मनए[32] हरषि तै ।
संपूरन स रि ग म पि व नि परिज,
भौन मध्य रैन [33]बरषा मै[33] चैन टंक गाए तें[34] । 226॥

ताल]

कारी कारी कादंमिनी[35] भारी त्यौं उमंडि आई,
दामिनी दमकि[36] झमकाय दीन्हौ त्यौंही मेह ।
बन-बन मोरन मचायौ[37] सोर दादुरन,
कोकिल के वैन सुनि पल न मुहात गेह ।
कहै सिरदार भूप मार तें बचाय लेहु,
जाहि[38] लेहु अंक भरि कीन्हौ जो नवीनो नेह ।
अतन दह[39]त तम [40]जत ठकिये न चले[41]
न चाहि[42] ब्रजचंद चंदमुषी की षबरि लेह ॥227॥

ख्याल ताल

माई री बदराह बदरा धावै ॥
करि येरी[43] रूप डरारे[44] करि चहुँ[45] तें[46] आवै ॥
ओपि(तधो) प[47] [48]काम न्रपदल की[48] नहीं चपला चमकावै ।
गरजत नहीं स्यांम घन सजनी दुंदुभो दै डरपावै ॥
बोलत नहीं मोर सुनि वन-वन ऐनकी बगु हैरावै ।
नहीं जगनु सिरदार कांमदल भठ जामगी जगावै[49] ॥228॥

32. ग—मनव । 33-33. प्रति 'ग' में यह पाठ नहीं है । 34. क ख—नै ।
35. ग—दामिनी । 36. ग—डमकि । 37. ग—मनायो । 38. ग—जारि ।
39. पत्रांक ५६ समाप्त । 40. ग—'जात अकरेनल्प लेन' । 41. ख—वले ।
42. ग—वाहि । 43. ग—वेरि । 44. ख—डरारि । 45. ग—चहु च ।
46. क ग—में । 47. क ख ग—तधोप । 48-48. ग—काम ऊप दल की ।
49. ग—जगारै ।

धुरपद ताल

घनो घन गरजे री माई आई अधिक रात।
(बूंद)[50] झमकै बिजुरी चमकै पौन बह आघात ।।
विन पिय सूनी सेज अंबुधि नैको नांहि[51] सुहात ।
पी-पी करत पपीया पापी दादुर दाहत गात ।।
हरि सुत बांहन बोलत आंहन ते पाहन अहि षात ।
कहै सिरदार सबद सुनि तिनके नींद नहीं निसि आत[52] ।।229।।

ताल

आजु ब्रज ऊपर(वासव)[53] कोप्यो ।
गरजन लगे घोर घंन चहुंदिस दीनि नाथ रथ तोप्यो ।।
डरपि डरपि गन गोप नंद नंद गोप सों कहत नंद कित गोप्यो ।
सुनि यह बांनि पांनि पर गिरवर धरि लीन्हौ जिम टोप्यो ।।
कहि सिरदार सकल ब्रज मंडल राषन हित पग रोप्यो ।।230।।

अथ रागिनी मलार रूप-कथन

कवित्त ताल

ओड़ो जाति धैवत भवन ध नि(स)[54] र ग म[55] है,
सुर अति पातुरी सु माल उर धार है ।
(आनंद)[56] देनी पिक बैनी गौरी गरवीली,
जोवन सुहीलीत बीरह बिथारी है ।
कहै सिरदार तन मिलन सिंगार करै,
बीन कर[57] धरै मुष जक पियहारी है ।

50. क ख—बुंद, ग—वंद । 51. ग—नाह । 52. क—यात । 53. क ख—बासब, ग—बासव । 54. राग के अनुसार 'स' पाठ भी होना चाहिये । 55. प्रति 'ग' में 'म' नहीं है । 56. क ख ग— आनद । 57. ग—करै ।

रोवै धीर [58]घी(र)[59] धरै याहि[58] बरषा में मध्य निसि,
गाइयै मलार यहै मेघ राग न्यारी है ।।231।।

कवित्त ताल-चौतालौ

जब तैं बदेस गए प्रीतम प्यारे कान्ह,
तब-हीं तैं दीन्हौ तजि पांन-पांन पानी है ।
भात[60] न सुहात परजंक हू पर परह्यो बान[61],
जिय अकुलात सुनि मोरन की बांनी है ।
कहै सिरदार जो पसावै[62] मार मार कहौ,
बारक सतावौ न जोये जोम आंनो है ।
लै-लै पंच बान[63] पंचबार आनि बेधत हो,
अबध बधू तो विधि बेदन बषानी है ।।232।।

कवित्त ताल

[64]सजि दल बदल प्रचंड बरिबंड कांम,
आयो चढ़ि बांम व्योम मंडल मढोइज्यौं ।
गहरे नगारे घन फहरे निसांन बन,
बिरहिन कीव बोलि बचन उढोइज्यौ ।
कहै सिरदार देषी चपला चमक सार,
दीन्है जू किवार बार बिरह बढाइज्यौ ।
राषत हौ हेत तौ गुपाल क्यों न सुधि लेत,
राधिका निकेत सजि बैठी है गढोइज्यौ ।।233।।[64]

ख्याल ताल

माई री घन गरजि डरपावै ।
दमकि दमकि दामिनी नभ जामिनी अंगना छू-छू जावै ।।

58-58. ग—धीर याही । 59. छंद पूरा करने के लिये 'र' आवश्यक है । तीनों प्रतियों में यह पाठ नहीं है । 60. ग—भार । 61. ग—जान । 62. ख—पसाचें । 63. ख—बार । 64-64. यह कवित्त 'ग' प्रति में नहीं है ।

वन-वन मोर सोर सुनि सजनी अति जियरा अकुलावे ।
पी-पी करत पपीहा पापी दादुर दुष्ट सतावै ।।
गावत गुनी मलार रागिनी सो सुनि पिय सुधि आवै ।
कहै सिरदार साजि बिरहादल मार[65] महीपति[65] धावै ।।234।।

कवित्त-ताल

उमंडि घुमंडि घोरे[66] धूमरे चमकि घन,
झूमि झूमि बादर अंटा पै आन छावगे ।
चंचला चमकि चक्र चोंधी है चहुंधा चित्त,
आंनिदित होकै सोर दादुर मचावैंगे ।
कहै सिरदार बूंदि लमकि[67] झमकि अहैं,
हरषि-हरषि बन केकी गन गावैंगे ।
कब घौं सुरंग षोलि परदा[68] ति बारी बारी,
बोलो अगनैनी तिया छतियां लगावैंगे ।।235।।

अथ रागिनी गूजरी रूप-कथन

कवित्त-ताल

स रि ग म पि ध नि रिषभ धांम संपूरन,
द्वादस अभूषन विभूषित बिसाल है ।
(सारो)[69] लाल रंग पीत कंचुकी दिपत[70] अंग,
कलित सिषड दल सेज पै विहाल है ।
कहै सिरदार कटि छीन परबीन अति,
रस[71] भरी गावै गुनी वजावत ताल है ।
गावै[72] दिन बरषा में प्रथम पहर मध्य,
मेघ राग बाल येहै गूजरी रसाल है ।।236।।

65-65. ग—पति । 66. ग—धो । 67. क—झमकि, ग—झुमकि । 68. पत्रांक ५८ समाप्त । 69 क ख ग —सरी । 70. ग —दिपत । 71 ग—रस भरी । 72. ग—गाव ।

[73]गरजि [74](गरजि रही)[74] घटाहु बरषि नीरद,
दबकि दबकि रह गई छबि दामिनी ।
करि करि सोर सषी सषी सरमाई रहे,
चाइ रहे दादुर भई री पिक श्रांमिनी ।
कहै सिरदार रह्यौ पवन झकौरा दै दै,
का कै भौन कीन्हों भोर श्रैसी कौन कामिनी ।
पीरी पौ[75] फाटी पुर फाटिक पुलन लागै,
श्राऐ क्यों न बिहारी बिहान लगी जामिनी ।।237.।[73]

ताल

जैसी मन-भावती की सुन्दर बदन जोति,
श्रैसी[76] है न होत देषी सरद ससंक में ।
देषी हाथ पांव धाइ कमल लजाइ चित्त,
दिनकर ध्यावत गड़े है बीच पंक में ।
कहै सिरदार जाकी देषी गति गजराज,
डारे सिर छार[77] सीह भयो छीन[78] लंक में ।
ह्वै है क्यों न रैन श्राछे[79] सुमन प्रजंक पर,
सुब्रन बेली[80] सी भरैगे बा श्रंक में ।।238।।

ख्याल ताल

[81]लषे इन स्यांम के नैना ।
छकी सी गई जकी सी झूमत घूमत गज गैना ।।
तन की सुधि न बसन सुधि सज[82]नी नहीं देषत श्रैना ।
कृष्ण कृष्ण लागी रसना[83] रट भई बाल मौनां ।।
ठाढ़ी सास ननद द्यौरांनी काहू की भैनां ।
ध्याइ ध्याइ सिरदार सारी छबि मानत चैनां ।।239।।[81]

73-73. यह कवित्त प्रति 'ग' में नहीं है। 74-74. क ख- गरजिर। 75. क—पहु। 76. ग—श्रसी। 77. ग—अर। 78. ख—लीन, ग—कीन। 79. ग –श्रद्धै। 80. ग—बीली। 81-81. यह कवित्त प्रति 'ग' में नहीं है। 82 पत्रांक ५६ समाप्त। 83. ख—सुसना।

धुरपद ताल

सुरति मानिनी[84] की देषौ ।
बैठी मुरारि मान मिंदर मैं करि अभिमान उमेषौ[85] ।।
दूरिहि दूरि फिरत दासी गन सकति सम्हारनि तेषौ[86] ।
जावक रंग मीन मानौ द्रिग पावक से [87] अब रेषौ ।।
बैठी पीठि[88] दिये अगनैनी सुष दैनी चलि पेषौ ।
लषि[89] सिरदार ब्याल सी बैनी जीवन को फल लेषौ ।।240।।

अथ रागिनी भोपाली रूप-कथन

कवित्त-ताल

सेत चीर करि भाल कुंकुम की षोरि बारी,
गोरे तन नारी[90] भारी पूरन सुहाग की ।
अंग-अंग आभूषन भूषित अनेक भांति,
काढ़ी चीरि चंद कैवों लता रूप बाग की ।
कहै सिरदार गुह्यो सुमन सुगन्ध हार,
पिय[91] पहिरायो चाहे[92] भरी अनुराग की ।
स रि ग म पि ध नि षरिज निसै पावसी को,
प्रथम पहर मै भुपाली मेघ राग की ।।241।।

ताल

केसरि तिलक मैं की बैनी में गुंथाइ गयो,
कैधों नैन(कंजन)[93] मैं अलि ह्वै लुभानो री ।
गोल ऐ कपोल तेरे तिनकी गडानो मंड,
कैधों देषि बिद्रुम से अधर चुंभानौ री ।

---

84. ख—काननी, ग—मानती । 85. ग—जनेषो । 86. ग—मेषो । 87. ग—सि । 88. ख—पीनि । 89. ग—सषि । 90. क ग—वारी । 91. ख—षिय । 92. ग—वाहे । 93. क ख ग—कजन ।

कहै सिरदार कैधों कंव[94] कंठ ही में बस्यौ,
कैधों नाभ कुंप घस्यो भेदहु न जान्यौ री ।
देह तु दया करि तौ पाउ[95] पिक वैनी बाल,
तन तेरो हाल मन मेरो है हिरानो री ।।242।।

कवित्त ताल तितालौ

जैसे तेरे कुच हैं उंचारै मति तैसे बोल,
जैसे तेरे कच तै सोने बिसतर री ।[96]
जैसी गति वैसी मति जिय तै[97] बिसारी बाल,
जैसे नैन तैसी ऐ बड़ाई उर घर रो ।
कहै सिरदार जैसे अघर हैं तैसे द्रिग,
करि करि प्यारी मति योही रिस भर री ।
आवत मनाइवे को बालम हमारे कहै,
जैसी तेरी कटि है तु तैसौ[98] मांन करि री ।।243।।

धुरपद ताल

[99]वाके मन की बलि जैऐ ।
मांने नहीं झझकारत हरि हार तन लजैऐ ।।
ज्यौं ज्यौं हठ ठानत द्रिग तानत त्यौं त्यौं निकटै जैऐ ।
गही गही बांह छोर दुपटा को कोरि करि चित्त सिहऐ ।
परि परि पाय करत परिरंभन चुंबन धार ढीठैऐ ।
लषि सो छबि सिरदारसिंह कहि अति हिये आनन्द पैऐ ।।244।।[99]

कवित्त ताल

मो सों म्रगनैनी कहो म्रगन के देषो नैना,
मेरे नैन देषिबे कौं काहै[100] को सिषाईए ।

94. ग—कंबु । 95. ग—पाल । 96. पत्रांक ६० समाप्त । 97. ग—तो ।
98. ग—तसो । 99-99. यह पद प्रति 'ग' में नहीं है । 100. क—कहि ।

सिंधुर गमनी कहौं सिंधुर सिंगारी पिये,
लषि लषि सोही गति जीये को रमाईए ।
कहै सिरदार हौं कहत हेम लतिका-सी,
हेम की लता बनाइ जिय को रमाईऐ ।
ससि सौं कमल सो कहत मेरो आनन है,
वे ही न बिलोकौ लाल यौं ही मोपैं आईऐ ।।245।।

अथ रागिनी देसकार रूप कथन

कवित्त ताल

कंचन बरन तन चंद सो बदन बेस,
उरज कठोर उर स्वाती सुत हार है ।
सोहत बिसाल द्रिग प्रीतम के संग बाल;
तन सु कमर लेत बिबिध बिहार है ।
कहै सिरदार तिये रीझिहि रिझावै पीये,
संपूरन स रि ग म पि ध नि बिचार है ।
षरिज भवन बरषा निसि के,
चौथे जांम गावत पिआरी मेघनारी देसकार है ।।246।।

ताल चौतालौ

कंचन से तन कारो रंचक उरोज वारी,
लोचन सरोज ग्रीवां भाइ सी उ[1]तारी है ।
चंद से बदन वारी दारि मरदन वारी,
अति सुकुमारी मानों मदन की नारी है ।
कहै सिरदार जाकी होठन लाली[2] पर,
डारो वारि जपा दल बिद्रुम पिवारी है ।
जब ते नजरि परी तब ही तैं अरी उर,
आंषिन के आगै षरी जरी सारी वारी है ।।247।।

1. पत्रांक ६१ समाप्त । 2. ग—लालीन ।

धुरपद ताल

जय आदि जोगी धरन भोगी हार वर सिर चंद जु ।
उत मंग गंग अनंग दाहन हरन पातक फंद जु ।।
वर व्रषभ बांहन त्रिपुर आहन करन चित आनन्द जु ।
सिरदार सेवक को सदा बर दीजिई[3] जग बंद जु ।।248।।

कवित्त ताल चौतालौ

(जय)[4]लम्बोदर सुर अरिचित,
विरचित[5] सुघर.बदन बिसाल जु ।
लब सुंड भुजदंड चारि,
बर मस्तक पर निस पाल जु ।
कनक किरीट जटित सिर ऊपरि उर,
कपिय द्रूम माल जु ।
मोदक असन मोद नित दायक,
लाइक संकर लाल जु ।
निज सेवक सिरदारसिंह पर,
कीजै कृपा कृपाल जु ।।249।।

[6]कवित्त ताल

(यह)[7] सुकमार घन वह तो कठिन तन,
उपमा लगै न कहै सुबर बेली की ।[6]
रंभा रति उरबसी [8]मेनका सु केसी मंजु-
घोष समताइ ना लहति जाकी चली की ।
कहै सिरदार जाकी आवन प्रजंक पर,
ग्रीवा भुजनाव न जनावन पहेली की ।
रात्यौ दिन येही छबि हिये में धरी रहति,
सुरति अरी रहति आंषिन नवेली की ।।250।।

---

3. ग—दीजये । 4. क ख ग —जये । 5. ग —विरचिते । 6-6. यह पाठ प्रति 'ग' में नहीं है । 7. क ख—येह । 8. ख—उरबठी ।

धुरपद ताल

केसव कृपा निधांन कृष्ण कूरम कान्ह के सीहरन ।
गोविंद गोकुलचंद गोप कुमार गोरधन धरन ।।
घनस्यांम घनपति गरब गारन धने घन जस करन ।
नद-नंद[9] जय नवनीत चोरन नवल नीरद बरन ।।
जये-जये[10] चतुरभुज चंचलापति चारुमति अघ हरन ।
जय चरन चारु उदार श्री सिरदार उर आभरन ।।251।।

इति श्री महाराज सुलतानसिंहजी सुत राजा सिरदारसिंह जी बिरचिते सुरतरंग ग्रंथे राग मेघ भारज्या संजुक्त बरनन नांम षष्ठमो तरंग।।6।। संपूरण समाप्तं ।।

सं. 1808 मीति माह सुद 10 गुरे लीषतं पुन्या सु गंभीर सागरेण ।। लोषत संहोता उदा बाचनार्थ ।।बास बणहेड़ छो ।।[11] ग्रंथे राग मेघ भारज्या सजुक्त बरनन नाम षष्टमो तरंग ।।6।। संपूरन समाप्त ।।

संमत 1883 मतो कातो सुदे 9 बुधे ता दिन संपूर्ण भई ।। लिषतं ब्रह्म (ब्राह्मण) भरुराम जात शिखवाल प्रोहित पालड़ा बास राजपुर का आदुओ बांच बोचार ज्यासु जै श्री कृष्ण जुको बांचज्यो ।।

पठनार्थ श्री महाराज कु वार उदयसिंघ जी ।।

ख—पुस्तक प्रकाश, जोधपुर, ग्रंथांक 1393 की पुष्पिका—

इति श्री महाराज सुलतानसिंह जी सुत राजा सिरदारसिंघ जी विरचिते सुरतरंगे ग्रंथे राग मेघ भारज्या संज्युक्त वर्णनं नाम षष्ठमो तरंग संपूर्णनम् श्रीरस्तु ।

---

9. क ख—मद मंद । 10. पत्रांक ६२ समाप्त । 11. (क) राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठानं ग्रंथांक ४१२३(प्रति 'ज') की पुष्पिका—ईति श्री महाराज सुलतानसिंह जी सुत राजा सिरदारसिंह जी विरचिते सुरतरंग।